ISSN2393-8838

Rs.10/-

Date of Publishing 19th October Vol. No.37 Issue No. 10

OCTOBER 2026

मासिक

# इसलाहे समाज

## समाज सुधारक पत्रिका

पैग़म्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः

"मुर्दों को बुरा न कहो क्योंकि मुर्दों ने जो कुछ किया था उसका बदला उन्हें मिल चुका"

(सहीह बुखारी)

# अल्लाह ही दाता है

मुहम्मद अज़हर मदनी

हज़रत उमर बिन अल ख़त्ताब रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि मैंने अल्लाह के सन्देष्टा मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को फरमाते हुए सुना कि अगर तुम अल्लाह पर इस तरह भरोसा करो जिस तरह भरोसा करने का हक़ है तो वह तुम्हें ऐसे ही रोज़ी देगा जिस तरह वह पक्षियों को रोज़ी देता है जो सुबह के वक़्त खाली पेट निकलते हैं और शाम के वक़्त पेट भर कर वापस आते हैं। (तिर्मिज़ी ४/५७३-२३४४, इब्ने माजा २/१३६४-४१६४, मुसनद अहमद १/२०५, ३३२)

रोज़ी का मामला बहुत अहम है। इन्सान अपनी पूरी ज़िन्दगी को इसी बिन्दु पर खतम कर देता है कि वह कहां से और कैसे रोज़ी हासिल करे? इसके लिये जितने तरीके और साधन होते हैं सब अपनाता है। एक मोमिन बन्दे का अक़ीदा यह होना चाहिए कि अल्लाह ही रोज़ी देने वाला है, उससे जितना मांगा जाए कम है और वह चाहे जितना दे उसके खज़ाने में राई के दाने के बराबर भी कमी नहीं हो सकती और रोज़ी जिसके सिलसिले में इन्सान इतना परेशान रहता है अपनी तमाम सृष्टि को रोज़ी पहुंचाने की ज़िम्मेदारी अपने ऊपर ले रखी है इसी लिये आप देखते हैं हर इन्सान बल्कि हर सृष्टि अल्लाह की दी हुई नेमतों से लाभान्वित हो रही है और उसे अल्लाह की तरफ से रोज़ी मिल रही है और रोज़ी देने के बारे में कोई भेद भाव नहीं है। मुस्लिम, गैर मुस्लिम, अच्छा बुरा, जानवर हो या इंसान, हर एक को रोज़ी मिल रही है और वहां से मिल रही है जहां से वह सोच भी नहीं सकता। लेकिन जब इन्सान का ईमान कमज़ोर हो अल्लाह पर भरोसा न हो तो वह बहुत सारी चीज़ों से वंचित (महरूम) हो जाता है और दर-दर की ठोकरें खाता है और अगर यही भरोसा और विश्वास अल्लाह पर इस तरह हो जिस तरह उस का हक़ है तो वह ऐसे ही रोज़ी देगा जैसे खाली पेट बेहाल पक्षियों को देता है। कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है "ज़मीन पर चलने फिरने वाले जितने जानदार हैं सब की रोज़ियां अल्लाह तआला पर है यानी वह जिम्मेदार है" (सूरे हूद-६) ज़मीन पर चलने वाली हर सृष्टि इनसान हो या जिन्नात, चौपाए हों या पक्षी, छोटी हो या बड़ी, समुद्र में हो या खुश्की (थल) पर हर एक को उसकी ज़रूरत के मुताबिक़ खूराक देता है। कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है : "आसमान में तुम्हारी रोज़ी है और वह भी जिस का तुम से वादा किया जाता है" (सूरे ज़ारियात-आयत नंबर २२)

जिस रोज़ी रोज़गार के बारे में इतनी स्पष्ट तालीमात हैं और वह भी वादा की शक्ल में तो ऐसी सूरत में हमारे ईमान में और ज़्यादा बढ़ोतरी होनी चाहिए और अल्लाह पर भरोसा और विश्वास होना चाहिए और रोज़ी के जो हलाल संसाधन हैं जिस की तरफ इस्लाम ने हमारा मार्गदर्शन किया है उनको अपनाएं और इन संसाधनों को अपना कर खूब मेहनत करनी चाहिए। अल्लाह से दुआ है कि वह हम लोगों को हलाल रोज़ी कमाने की क्षमता दे, ईमान और विश्वास पर बाक़ी रखे और जब हमारा ख़ातमा हो तो इस आस्था के साथ हो कि अल्लाह ही दाता (देने वाला) है।

मासिक

# इसलाहे समाज

अक्टूबर 2026 वर्ष 37 अंक 10

रबीउ आख़िर 1448 हिजरी

**संरक्षक**

असग़र अ़ली 'सलफ़ी'

**संपादक**

मुहम्मद ताहिर

- ❑ वार्षिक राशि 100 रुपये
- ❑ प्रति कॉपी 10 रुपये

**सम्पर्क**

**मासिक इसलाहे समाज** (हिन्दी)

4116, उर्दू बाज़ार, जामा मस्जिद

दिल्ली-110006

फोन : 23273407 फ़ैक्स: 23246613

RNI No. 53452/90

**मुद्रक एवं प्रकाशक मुहम्मद ताहिर ने मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द की ओर से एम.एस. प्रिन्टर्स, A-145 गली न० 8 चौहान बांगर, सीलमपुर, दिल्ली-53 से छपवा कर अहले हदीस मंज़िल 4116, उर्दू बाज़ार, जामा मस्जिद दिल्ली-6 से प्रकाशित किया।**

**सम्पादक:** मुहम्मद ताहिर

**लेखक के विचारों से संस्था का सहमत होना आवश्यक नहीं है।**

# इस अंक में

1. अल्लाह ही दाता है 02

2. हूती और उसके समर्थक बगावत और शैतानियत के रास्ते पर 04

3. फ़ितनों के दौर में असलाफ का तर्ज-ए-अमल 09

4. जमाअती ख़बरें 13

5. बीसवीं सदी में बिहार में फारसी भाषा और साहित्य के विकास में व़िानों का योगदान 14

6. रिपोर्टः मजलिसे आमिला मर्कजी जमीअत जमीअत अहले हदीस हिन्द 18

7. मर्कज़ी जमीअत की प्रेस रिलीज़ 24

8. कलैन्डर **2027** 28

ईमेल:-

**Jaridahtarjuman@gmail.com**

**Jamiatahlehadeeshind@hotmail.com**

अब 'इसलाहे समाज' इन्टरनेट पर भी उपलब्ध है

वेब साइट:- **www.ahlehadees.org**

सम्पादकीय

# हूती और उसके समर्थक बगावत और शैतानियत के रास्ते पर

मौलाना असगर अली इमाम महदी सलफी
अध्यक्ष, मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द

जब आप विशेष रूप से इस्लामी दुनिया और उम्मते-मुस्लिमा की तथा सामान्य रूप से दुनिया की दूसरी कौमों की स्थिति और उनके भविष्य को जानने की कोशिश करेंगे तो आपको यह बात बहुत स्पष्ट रूप से महसूस होगी कि इन कौमों ने अपनी तरक्की के दिनों में भी अपने पतन और कमजोरी के बुनियादी कारणों को समय रहते नहीं समझा। जीवन के सामान्य क्षेत्रों के साथ-साथ युद्ध के मैदान में भी उन्होंने अपनी हार और बर्बादी के वास्तविक कारणों को समझने के बजाय दूसरी ही बातों में खुद को उलझाए रखा।

मैं इस समय आपका ध्यान उन मशहूर कारणों की ओर नहीं ले जाना चाहता, जिन्हें आम तौर पर कौमों के नष्ट होने और मिट जाने का कारण बताया जाता है। यह भी एक सच्चाई है, जिसे किसी शायर ने इस तरह बयान किया हैरू

आ तुझको बताऊँ मैं तकदीर-ए-उमम क्या है,
शमशीर-ओ-सिनान अव्वल, ताऊस-ओ-रबाब आखिर।

क्योंकि अनेक महत्वपूर्ण कारणों में यह भी एक कारण है। लेकिन तलवार और भाले हर हाल में सबसे पहले स्थान पर नहीं होते। कौमें इनके बिना भी अपनी जीत और कामयाबी के झंडे अधिक मजबूती, तेजी और लंबे समय तक लहरा सकती हैं। एक दूसरे शायर ने इसी बात को इन शब्दों में कहा हैः

यकीं महकम, अमल पैहम, मुहब्बत फातेह-ए-आलम,
जिहाद-ए-जिंदगानी में हैं ये मर्दों की शमशीरें।

यही बात यहां भी कही गई है। दूसरे लोगों के यहां इस विचार को महत्व दिया जाए या नहीं, लेकिन इस्लाम में इसे सबसे अधिक प्राथमिकता और महत्व हासिल है। तलवार और भाले का इस्तेमाल तो बहुत अधिक मजबूरी, अत्याचार और जुल्म की स्थिति पैदा होने के बाद ही किया जाता है। अपनी रक्षा के सभी जायज तरीके अपनाए जा सकते हैं। लेकिन उनमें सबसे अच्छा, सबसे श्रेष्ठ और सबसे बड़ा तरीका यह हैः ''बुराई का जवाब उस तरीके से दो जो सबसे बेहतर हो''। इसका मतलब यह है कि यदि अत्याचार और ज्यादती की हद हो जाए और हालात बहुत खराब हो जाएं, तब भी सबसे अच्छे और बेहतर तरीके से पेश आने का आदेश दिया गया है। यानी ईंट का जवाब पत्थर से नहीं, बल्कि ईंट से भी नहीं, बल्कि फूल से, गुलदस्ते और कली से देना है। बल्कि यदि इससे भी कोई बेहतर तरीका हो तो उसका इस्तेमाल करना चाहिए। सामान्य इंसानी समझ भी यह बात आसानी से स्वीकार करती है कि आम हालात में बुराई का मुकाबला बुराई से करना सही नहीं है। क्या आपने कभी देखा है कि गंदगी को गंदगी से साफ किया गया हो और उसके बाद उसे पाक और पवित्र भी कहा जा सके? ऐसा करने से तो गंदगी और बढ़ती चली जाएगी। इसी कारण इस्लाम ने यह शिक्षा दी है कि बुराई का जवाब सबसे अच्छे तरीके से दिया जाए। इससे भी बढ़कर रहमतुल्लिल आलमीन हजरत मुहम्मद (स.अ.व.) ने अल्लाह की रहमत को पूरी दुनिया में फैलाने की कोशिश की और इस महान उद्देश्य में आप पूरी तरह सफल हुए।

फिलहाल हमारी चर्चा इस बात पर हो रही थी कि कौमें अपनी नाकामी, हार और पतन के कारणों को समय रहते पहचान नहीं पातीं

और इसी वजह से नष्ट होती रहती हैं। कभी-कभी उनकी भूल और नासमझी इतनी बढ़ जाती है कि वे अपनी आंखों के सामने सब कुछ होता हुआ देखने के बावजूद उसे अनदेखा कर देती हैं। वे गलत बातों को सही साबित करने के लिए झूठी दलीलें देने लगती हैं और असली कारणों को छोड़कर दूसरे कारण तलाशने लगती हैं, चाहे इसके लिए उन्हें कितनी ही दूर की कौड़ी क्यों न लानी पड़े। खवारिज ने इस्लाम के उतार-चढ़ाव को रोकने के नाम पर कितनी बड़ी मूर्खता और अज्ञानता का परिचय दिया। कम समझ वाले और कम उम्र के उन लोगों ने किस तरह मुस्लिम एकता, नैतिकता और अनुशासन को बर्बाद किया। उन्होंने मुसलमानों की एकजुटता को कैसे तोड़ा, उनकी कतारों में दरार कैसे पैदा की और उनकी शक्ति को किस तरह कमजोर किया? उनके कितने ही आकर्षक और बुलंद नारे थे, जिनसे बहुत से लोग प्रभावित हुए और बहुत से लोग उनके प्रभाव में आ गए। उनके कितने ही जोशीले नारे थे, जिन्होंने नौजवानों के खून को गर्म कर दिया और अंत में उन्हें खून-खराबे और मौत के रास्ते पर धकेल दिया। आज भी उन्होंने फिलिस्तीन का नाम लेकर गज़ा को तबाह कर दिया। उनकी गैर-जिम्मेदाराना ललकार ने इस ऐतिहासिक इस्लामी शहर को बर्बादी के कगार पर पहुंचा दिया। उन्होंने 'अमेरिका मुर्दाबाद'और 'इजराइल मुर्दाबाद'के नारे लगाए, अरब देशों पर मिसाइलें दागीं और इन नारों के माध्यम से पूरी दुनिया के लोगों को, विशेष रूप से अरब देशों को, उनके सबसे बड़े मददगार सऊदी अरब के खिलाफ भड़काया। उनके न्याय, इंसाफ, कुरआन और हदीस, सही धार्मिक पद्धति तथा धर्म के प्रति कठोरता और ढ़ता के दावे बहुत लंबे-चौड़े थे। इन्हीं दावों के सहारे उन्होंने उस समय के खलीफा और बड़े-बड़े बुजुर्गों को तकफीर की तलवार के नीचे लाने की कोशिश की। इसके परिणामस्वरूप अंतहीन फितनों ने जन्म लिया और कत्ल-ओ-गारत का बाजार गर्म हो गया। मुसलमान आपस में लड़ने लगे, अशांति और बुराई फैल गई और यहां तक कि बड़े-बड़े शासकों, अमीरों तथा खुलफा-ए-राशिदीन तक की हत्या कर दी गई।

खवारिज का फितना किसे मालूम नहीं? उसकी गंभीरता, विनाशकारी प्रभाव और भौतिक तथा नैतिक बर्बादी का अंदाजा कौन लगा सकता है? लेकिन इन सबके बावजूद लोग उन्हीं के समर्थक बने रहे। उनके इन लोकप्रिय नेताओं के सामने कुरआन और हदीस के व्याख्याकार, दीन की समझ और उसकी गहरी जानकारी रखने वाले इमाम तथा नबी मुहम्मद (स.अ.व.) की दुआ के वास्तविक पात्र हजरत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रजि.), जिन्हें हिब्रुल उम्मत यानी उम्मत का महान विद्वान कहा जाता है, की बात सुनने वाला भी कोई नहीं था। दरअसल, ऐसे धोखेबाज नारों का नशा ही कुछ ऐसा होता है। खासकर जब मामला दीन, ईमान, कुफ्र और इस्लाम से जुड़ा हो तो फितने का नशा और भी बढ़ जाता है। यह ऐसा जादू बन जाता है जो लोगों के सिर चढ़कर बोलता है। उस समय लोग किसी की बात सुनने को तैयार नहीं होते और न ही उन्हें सोचने-समझने का अवसर मिलता है। आम लोग और नासमझ नौजवान इसके अलावा कुछ और सोच ही नहीं पाते। हजरत अली (रजि.) जिन्हें खलीफा-ए-राशिद और 'अकजाहुम अली' कहा गया, जो दुनिया के सबसे कठिन मामलों में सही और गलत का फैसला करने की क्षमता रखते थे, उनके खिलाफ भी कुफ्र का फतवा लगाने पर यही जोशीले नौजवान आमादा थे। इन नौजवानों के दीन और ईमान से जुड़े तमाम विचार तथा कुरआन और ईमान के नाम पर पेश किए जाने वाले उनके तर्कों को हजरत अली (रजि.) ने केवल एक वाक्य से गलत साबित कर दिया था। उन्होंने उनके भटकाव, फितना फैलाने की

प्रवृत्ति और दीनदारी के तमाम दिखावों की असलियत सामने ला दी थी। हजरत अली (रजि.) ने खवारिज की इस दिखावटी धार्मिकता का पर्दाफाश इन शब्दों में किया थाः ''बात तो हकध की है, लेकिन उसके माध्यम से मकसद बातिल (गलत) हासिल करना है।'' इस एक वाक्य ने खवारिज की असलियत खोलकर रख दी थी। वे कुरआन की इस आयत यानी ''फैसले का अधिकार केवल अल्लाह को है'' को आधार बनाकर हजरत अम्र बिन आस (रजि.) जैसे विजेता और दूरदर्शी मुदब्बिर, हजरत अबू मूसा अशअरी (रजि.) जैसे महान विद्वान और ध र्मशास्त्री, हजरत अली (रजि.) जैसे न्यायाधीश, बुद्धिमान और बहादुर व्यक्ति तथा हजरत मुआविया (रजि. ) जैसे अरब के कुशल राजनीतिज्ञ के फैसले को मानने से इनकार कर रहे थे। लेकिन खवारिज अपनी बात मानने वाले कहां थे। क्योंकि कुरआन और हदीस की शिक्षाएं उनके दिलों में उतरती ही नहीं थीं। अल्लाह के आखिरी नबी हजरत मुहम्मद (स. अ.व.) ने इन्हीं खवारिज के बारे में बताया था कि वे दीन से इस तरह निकल जाएंगे, जैसे तीर कमान से निकल जाता है और शिकार को पार कर जाता है।

दरअसल इस्लाम में केवल इबादतों का ही आदेश नहीं दिया गया है, बल्कि एक मोमिन को अनुशासन और व्यवस्था के साथ जीवन बिताने का भी जिम्मेदार बनाया गया है। उसे अल्लाह के अधिकारों (हुकूकुल्लाह) और बंदों के अधिकारों (हुकूकुल इबाद) दोनों को पूरा करने का आदेश दिया गया है। दीन, दुनिया और आखिरत, हर जगह उसे अपने कामों का जवाब देना होगा। बल्कि धरती पर किसी भी प्रकार की बुराई और बिगाड़, यहां तक कि सबसे भयानक अपराध यानी खून-खराबा भी इसी अशांति और अव्यवस्था के कारण पैदा होता है। इसी वजह से इस्लाम ने हर तरह की अव्यवस्था और फसाद को नापसंद किया है। अल्लाह तआला का फरमान हैः ''फितना हत्या से भी अधिक गंभीर है।'' एक दूसरे स्थान पर अल्लाह तआला फरमाता हैः ''निश्चय ही अल्लाह फसाद को पसंद नहीं करता।'' अल्लाह तआला ने कुरआन करीम में बार-बार यह हिदायत दी है। उसने पहले एकता बनाए रखने का आदेश दियाः ''तुम सब मिलकर अल्लाह की रस्सी को मजबूती से थाम लो।'' इसके तुरंत बाद अलग-अलग होने और आपस में बंटने से मना करते हुए फरमायाः ''और आपस में मत बंटो।'' दुनिया की राजनीतिक पार्टियां, राष्ट्रीय और स्थानीय संगठन तथा सामाजिक संस्थाएं जब आपसी मतभेद, फूट और दुश्मनी का शिकार होकर टुकड़ों में बंटने लगती हैं तो बुराई के रास्ते खुलते चले जाते हैं। लेकिन जब यही फूट, अव्यवस्था और बिगाड़ दीन के नाम पर पैदा होने लगे तो यह बहुत बड़े फितने का कारण बन जाता है। फिर देश, कौम और पूरी इंसानियत को लंबे समय तक इसका खामियाजा भुगतना पड़ता है ज़रा विचार कीजिए कि पूरी कायनात के मालिक और उसके पैदा करने वाले अल्लाह तआला का क्या फरमान हैः ''निश्चय ही जिन लोगों ने अपने दीन को टुकड़ों में बांट दिया और अलग-अलग गिरोह बना लिए, उनसे आपका कोई संबंध नहीं है।'' इसका मतलब यह है कि दीन के नाम पर फूट, बंटवारा, अलगाव, गुटबंदी और अव्यवस्था पैदा करने वालों से अल्लाह तआला और उसके रसूल (स.अ. व.) अपनी नाराजगी और बेजारी जाहिर करते हैं। दरअसल, नबी (स.अ.व.) को भेजने का एक बड़ा उद्देश्य पूरी इंसानियत को भाईचारे के एक सूत्र में पिरोना था। इस्लाम नस्ल, जाति, राष्ट्रीयता, शारीरिक बनावट, भौगोलिक क्षेत्र, रंग या भाषा के आधार पर नहीं, बल्कि इस्लाम की बुनियाद पर इंसानी भाईचारे को बढ़ावा देता है। ऐसा भाईचारा जिसमें शांति, प्रेम और सबके अधिकारों तथा हितों की सुरक्षा की गारंटी हो। लेकिन केवल भाईचारा ही काफी

नहीं है, क्योंकि उसमें भी कहीं न कहीं दरार पैदा हो सकती है। इसलिए इस्लामी अनुशासन और व्यवस्था, जिसे रब्बुल आलमीन पसंद करता है और जिसे उसने निर्धारित किया है, उस पर चलना हर तरह की बुराई, फसाद, टकराव, आपसी दुश्मनी और फूट से बचने के लिए जरूरी है।

अल्लाह रब्बुल इज्जत ने पूरी कायनात को पैदा किया और उसे एक बेहद मजबूत और शक्तिशाली व्यवस्था के अधीन रखा है। यदि ऐसा न होता तो इतना मजबूत और व्यवस्थित संसार बिखरकर रह जाता। यहां सबसे बुनियादी बात यह समझने की है कि पूरी कायनात का संचालन एक ही सत्ता के हाथ में है। अल्लाह तआला फरमाता हैः ''अगर आसमान और जमीन में अल्लाह के सिवा कोई और माबूद (पूज्य) होता, तो दोनों (आसमान और जमीन) निश्चित रूप से तबाह हो जाता।''

इससे यह भी पता चलता है कि किसी भी व्यवस्था को सही ढंग से चलाने के लिए एक सर्वोच्च नेतृत्व का होना जरूरी है। बाकी सभी लोग उसके अधीन और आपस में जुड़े हुए तथा अनुशासित हों। उस नेतृत्व के प्रति सहयोग, सलाह-मशविरा और आज्ञापालन का रवैया होना चाहिए। यहां सलाह-मशविरा जरूरी है, शोर-शराबा और हंगामा नहीं। तभी कोई व्यवस्था चल सकती है, कोई घर आबाद रह सकता है, कोई कारखाना काम कर सकता है और कोई देश तरक्की कर सकता है। वरना सब कुछ टुकड़ों में बंटकर ताश के पत्तों की तरह बिखर जाएगा। फिर यह स्थिति पैदा होगी। ''तुम कमजोर पड़ जाओगे और तुम्हारी ताकत खत्म हो जाएगी।'' इससे पता चलता है कि समझदार लोगों के लिए सबसे बड़ी बुनियाद और असल आधार तौहीद यानी अल्लाह को एक मानने का ईमान है। दीन के सभी धार्मिक कार्यों की अहमियत तो सभी मानते हैं, लेकिन दुनिया के कामों की सफलता भी इसी बुनियाद पर निर्भर करती है। कुरआन करीम ने अनेक माबूदों को मानने और शिर्क के नुकसान तथा आख़िरत में होने वाली सजा को तो बयान किया ही है, साथ ही दुनिया की जिंदगी में इसके बुरे परिणामों को भी इतनी स्पष्टता से बताया है कि सबक लेने वाली आंखों के लिए यह रोशनी और मार्गदर्शन का साधन है।

नमाज इस्लाम की सबसे महत्वपूर्ण इबादतों में से एक है। इसकी अहमियत का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि नमाज छोड़ने के बारे में बहुत सख्त चेतावनी दी गई है। लेकिन नमाज में भी अकेले इबादत करने के बजाय जमात और अनुशासन पर विशेष जोर दिया गया है। अल्लाह तआला फरमाता हैः और रुकू करने वालों के साथ तुम भी रुकू करो। इसका मतलब है कि मुसलमानों को जमात के साथ इमाम के पीछे नमाज पढ़नी चाहिए। दुनिया के बड़े-बड़े विद्वान, शासक और बुद्धिमान लोग भी जब नमाज के लिए खड़े होंगे तो उन्हें एक ही इमाम की पैरवी करनी होगी। इमाम के साथ खड़ा होना, रुकू करना, सजदा करना और बैठना ही जमात के अनुशासन का हिस्सा है। किसी को यह नहीं सोचना चाहिए कि मैं ही सबसे बेहतर हूं और मेरी ही बात मानी जाए।

जकात में भी सामूहिक व्यवस्था का बहुत महत्व है। इसके लिए बैतुलमाल यानी सामूहिक धन-कोष की व्यवस्था को जरूरी माना गया है। मौलाना अबुल कलाम आजाद (रह.) ने भी इस व्यवस्था को मुसलमानों की आर्थिक समस्याओं के समाधान का एक महत्वपूर्ण जरिया बताया है। इससे गरीबों की मदद होती है और पूरी कौम आर्थिक रूप से मजबूत बनती है।

रोजा देखने में इंसान और अल्लाह के बीच की इबादत है, लेकिन इसमें भी चांद देखने, रोजा शुरू करने, ईद मनाने और तरावीह की नमाज जैसे मामलों में सामूहिकता और आपसी तालमेल का ध्यान रखा गया है।

हज तो पूरी दुनिया के मुसलमानों का सबसे बड़ा धार्मिक जमावड़ा है। इसमें हर जगह और हर कदम पर समय, नियम, नेतृत्व और अनुशासन का पालन करना जरूरी है। कठिन परिस्थितियों में भी हाजियों को एक व्यवस्था के अनुसार काम करना पड़ता है। इस संबंध में हजरत अब्दुल्लाह बिन उमर (रजि०) का व्यवहार हमारे लिए बड़ी सीख है। हज्जाज बिन यूसुफ जैसे कठोर शासक के पीछे भी उन्होंने नमाज अदा की। हालांकि वह नमाज में देरी और दूसरे गलत कामों पर आपत्ति जताते थे। उनका तरीका यह था कि लोगों को सुन्नत की सही बात समझाई जाए, लेकिन ऐसा कोई कदम न उठाया जाए जिससे उससे भी बड़ा फसाद पैदा हो।

आज हमारी समस्या यह है कि कभी-कभी एक सुन्नत पर अमल करने के नाम पर हम इतने मतभेद और झगड़े पैदा कर देते हैं कि दूसरी महत्वपूर्ण सुन्नतें भी पीछे छूट जाती हैं। भलाई की बात कहने के नाम पर समाज में नफरत और अव्यवस्था फैलने लगती है। जबकि इस्लाम हमें समझदारी, धैर्य और अच्छे तरीके से भलाई की ओर बुलाने की शिक्षा देता है। इस्लाम का एक महत्वपूर्ण सिद्धांत यह भी है कि किसी बुराई को रोकने या किसी सुन्नत पर अमल करने के तरीके से यदि उससे भी बड़ी बुराई और नुकसान पैदा होने का डर हो तो ऐसा कदम नहीं उठाना चाहिए।

अल्लाह तआला ने सूरज और चांद की कसम खाकर और उनकी अलग-अलग मंजिलों का जिक्र करके इंसानों को एक बड़ा संदेश दिया है। जब पूरी कायनात एक तय नियम के अनुसार चल रही है तो इंसान अपनी जिंदगी में नियमों और अनुशासन का पालन क्यों नहीं करना चाहता?

आज घरों, समाजों, मदरसों, मस्जिदों, जमीयतों और संगठनों में आपसी झगड़े, मतभेद और एक-दूसरे के काम में रुकावट डालने की आदत बढ़ती जा रही है। हर व्यक्ति चाहता है कि व्यवस्था बनी रहे, लेकिन खुद नियमों का पालन करने और अपनी जिम्मेदारी निभाने को तैयार नहीं होता। यही सोच परिवार, समाज, संगठन और पूरी उम्मत की एकता को कमजोर कर रही है।

हकीकत यह है कि जिस तरह मशीन का एक छोटा-सा पुर्जा खराब होने से पूरी मशीन रुक जाती है, उसी तरह किसी समाज या संगठन का एक व्यक्ति भी अपने गलत व्यवहार से पूरी व्यवस्था को नुकसान पहुंचा सकता है। इसलिए हर व्यक्ति को अपनी ज़िम्मेदारी समझनी चाहिए और दूसरों के साथ मिल-जुलकर काम करना चाहिए।

यमन की स्थिति भी आपसी झगड़ों, गुटबाजी और सत्ता की लड़ाई के बुरे नतीजों का एक उदाहरण है। हूती आंदोलन के संघर्ष और क्षेत्र में बढ़ते तनाव ने यमन के लोगों को बहुत मुश्किल में डाल दिया है। बाब-अल-मंदब जैसे महत्वपूर्ण समुद्री रास्तों पर तनाव का असर क्षेत्र की शांति और व्यापार पर भी पड़ा है। इस संघर्ष में सबसे ज्यादा नुकसान आम और बेगुनाह लोगों को उठाना पड़ा है। इसलिए जरूरी है कि खून-खराबा बंद हो और बातचीत के जरिए शांति का रास्ता निकाला जाए। पूरी कायनात हमें यह सिखाती है कि हर काम नियम, अनुशासन और आपसी तालमेल से होना चाहिए। अगर इंसान भी अपनी जिंदगी में इन बातों को अपनाए तो परिवार, समाज, संगठन और उम्मत में एकता और मजबूती पैदा हो सकती है। लेकिन अगर हर व्यक्ति अपनी मनमानी करेगा और दूसरों के काम में रुकावट डालेगा तो सुधार की जगह बर्बादी पैदा होगी। अल्लाह तआला हमें आपसी झगड़ों से बचाए, एकता और भाईचारे के साथ रहने की तौफीक दे और पूरी दुनिया में अमन और शांति कायम फरमाए। आमीन।

❑❑❑

# फितनों के दौर में असलाफ का तर्ज-ए-अमल

मौलाना अब्दुस्सबूर हम्माद उमरी

समय ऐसे भी आते हैं जब फितनों की तीव्रता, व्यापकता और प्रभाव इस हद तक बढ़ जाता है कि सच और झूठ के बीच अंतर करना मुश्किल हो जाता है और इंसान वैचारिक तथा व्यावहारिक उलझनों का शिकार हो जाता है। हमारा वर्तमान दौर भी इसी तरह का एक अशांत समय महसूस होता है, जहाँ नफ्स की इच्छाएँ, वैचारिक गुमराहियाँ, नैतिक पतन और दीन के प्रति उदासीनता अपने चरम पर दिखाई देती हैं।रसूलुल्लाह (स.अ.व.) ने इस स्थिति के बारे में पहले ही खबर देते हुए फरमायाः ''नेक अमलों में जल्दी करो, उन फितनों के आने से पहले जो अँधेरी रात के टुकड़ों की तरह होंगे। उस समय आदमी सुबह ईमान वाला होगा और शाम को काफिर हो जाएगा।'' (सहीह मुस्लिमः ११८) ऐसे नाजुक हालात में एक मुसलमान के सामने सबसे महत्वपूर्ण सवाल यही होता है कि वह कौन-सा रास्ता अपनाए, जिससे अपने ईमान की रक्षा कर सके? सलफ सालेहीन हमारे लिए आदर्श और नमूना हैं। यह वही पाकीजा जमाअत है जिसने फितनों के सबसे कठिन दौर में भी इल्म, हिकमत, सब्र और दूरदर्शिता के साथ सच्चाई का रास्ता अपनाया और उम्मत के लिए एक व्यावहारिक उदाहरण छोड़ा।

फितना का शाब्दिक और शरई अर्थ अरबी भाषा में 'फितना'शब्द का इस्तेमाल आजमाइश, परीक्षा और किसी चीज को परखने के अर्थ में होता है। शरीअत की भाषा में फितना हर उस आजमाइश को कहा जाता है जो इंसान के ईमान, सोच और अमल को प्रभावित करे और उसे सच्चाई के रास्ते से हटा दे। कुरआन मजीद में फितने को एक बड़ी और व्यापक आजमाइश बताते हुए अल्लाह तआला ने फरमायाः ''उस फितने से डरो जो तुममें से केवल जालिमों ही को अपनी चपेट में नहीं लेगा, बल्कि सबको अपनी लपेट में ले लेगा।'' (अल-अनफालः २५) इसी तरह एक दूसरी जगह फरमायाः ''तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद केवल एक आजमाइश हैं।'' (अत-तगाबुनः १५)

उपर्युक्त आयतों से स्पष्ट होता है कि फितने आंतरिक भी होते हैं और बाहरी भी। इनके प्रभाव इंसान की व्यक्तिगत और सामूहिक जिंदगी में दिखाई देते हैं।

फितनों के प्रकारः विद्वानों ने मुख्य रूप से फितनों की दो बड़ी किस्मों का उल्लेख किया हैः

१.फितना-ए-शुबहातः संदेह, शंकाओं और विचारों का फितना।

२.फितना-ए-शहवातः इच्छाओं और मन की ख्वाहिशों का फितना।

(अ) फितना-ए-शुबहात (संदेह और विचारों का फितना): ये वे फितने हैं जो इंसान के अकीदे, सोच और विचारधारा को प्रभावित करते हैं। इनमें झूठ को सच और सच को झूठ बनाकर पेश किया जाता है, जिसके कारण इंसान सच्चाई को पहचानने की क्षमता खो बैठता है। हजरत हुजैफा (रजि.) फरमाते हैंः ''वास्तविक गुमराही यह है कि जिस चीज को तुम पहले बुरा और गलत समझते थे, उसे अच्छा और सही समझने लगो और जिसे पहले अच्छा और भलाई समझते थे, उसे बुरा ठहराने लगो।'' (अल-इबानाः ३७५)

(ब) फितना-ए-शहवात (इच्छाओं का फितना): ये वे फितने हैं जो इंसान को गुनाहों, नफ्स की इच्छाओं और दुनियावी सुख-सुविध

ाओं की ओर आकर्षित करते हैं, जिससे उसका अमल बिगड़ जाता है। इमाम इब्नुल कय्यिम (रह.) फरमाते हैं कि शुबहात के फितनों का अंत ईमान और यकीन से होता है, जबकि शहवात के फितने का मुकाबला सब्र के जरिए किया जाता है। (इगासातुल लहफान, भाग २, पृष्ठ १३०)

फितनों के प्रभावः जब फितने मुस्लिम उम्मत पर छा जाते हैं तो झूठ सच का रूप धारण कर लेता है और सच-झूठ में अंतर करना मुश्किल हो जाता है। ऐसे माहौल में अक्ल और समझदारी की जगह भावनाएँ, पक्षपात और इच्छाएँ ले लेती हैं। फैसले इल्म और इंसाफ के बजाय नफ्स की ख़्वाहिशों के अनुसार होने लगते हैं। इससे समाज में झगड़े, मतभेद और आपसी अविश्वास बढ़ने लगता है। फितनों का असर धीरे-धीरे इंसान के दिल और ईमान पर भी पड़ता है। दीन की रूहानी ताकत कमजोर होने लगती है और इखलास, तकवा तथा सुन्नत की पैरवी जैसी खूबियाँ घटने लगती हैं। रसूलुल्लाह (स.अ.व.) ने फरमायाः ''फितने दिलों पर इस तरह पेश किए जाते हैं, जैसे चटाई के तिनके एक-एक करके बुने जाते हैं।'' (सहीह मुस्लिमः १४४)

आज के दौर में नास्तिकता, दीन से दूरी, पश्चिमी विचारधारा, अश्लीलता और सोशल मीडिया के जरिए फैलने वाली बेबुनियाद बातों ने कई नए फितनों को जन्म दिया है। हर व्यक्ति बिना इल्म के अपनी राय देने लगा है और इल्म तथा अज्ञान के बीच का अंतर मिटता जा रहा है। इसीलिए सलफ सालेहीन ने फितनों के समय जबान की हिफाजत, बेकार की बहसों से दूरी और विद्वानों के मार्गदर्शन में रहने पर जोर दिया है। ईमान की कमजोरी, इबादतों में सुस्ती और दुनिया की मुहब्बत इंसान को फितनों का मुकाबला करने में कमजोर बना देती है।

फितनों का दौर और मनहज-ए-सलफः फितनों के दौर में सलफ सालेहीन का तरीका कुरआन और सुन्नत की समझ, समझदारी और दूरदर्शिता पर आधारित था। उन्होंने न तो जोश में आकर कोई कदम उठाया, न बिना सोचे-समझे किसी गतिविधि में शामिल हुए और न ही सच्चाई से बचने के लिए खामोशी अपनाई। बल्कि उन्होंने इल्म, सब्र, सावधानी और सुधार का रास्ता अपनाया। वे लोगों को शरीअत के अनुसार चलने, विद्वानों की सलाह मानने और फसाद बढ़ाने वाली बातों व कामों से बचने की सीख देते थे। यही उनका संतुलित मनहज था, जिसकी कुछ प्रमुख विशेषताओं का संक्षिप्त वर्णन नीचे किया जा रहा है।

(१) खामोशी, जबान पर नियंत्रण और अनावश्यक बातचीत से परहेजः फितनों के दौर में सबसे पहली सुरक्षा जबान की हिफाजत है, क्योंकि बहुत-से फितने तलवार से पहले जबान से जन्म लेते हैं और कई झगड़े केवल एक शब्द से भड़क उठते हैं। सलफ सालेहीन जानते थे कि अगर जबान पर नियंत्रण न रहे तो वह दिलों में नफरत, समाज में अशांति और उम्मत में फूट का कारण बन जाती है। इसीलिए सलफ सालेहीन ने फितनों के माहौल में अनावश्यक टिप्पणी, बेकार बहस और दूसरों के मामलों में दखल देने से बचने को सलामती का जरिया बताया। हजरत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रजि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (स.अ.व.) ने आने वाले फितनों के बारे में फरमायाः ''एक ऐसा फितना आएगा जिसमें सोया हुआ व्यक्ति लेटे हुए से बेहतर होगा, लेटा हुआ बैठने वाले से बेहतर होगा और बैठा हुआ खड़े होने वाले से बेहतर होगा।'' (मुसनद अहमदय अस-सिलसिलतुस सहीहाः ३२५४) मुल्ला अली कारी (रह.) बताते हैं कि फितनों के दौर में लोगों के मामलों पर अनावश्यक चर्चा अक्सर दिल दुखाने, झगड़े और फसाद का कारण बनती है। इसलिए बेकार की बातचीत से जबान को बचाना ही सलामती का रास्ता है। (मिरकातुल

मफातीह)

(२) फितनों के माहौल से दूरी और अलग रहनाः सलफ सालेहीन के तरीके का दूसरा महत्वपूर्ण सिद्धांत था कि जहाँ तक संभव हो, फितनों के माहौल से दूर रहा जाए। वे जानते थे कि जब हालात संदिग्ध हो जाएँ और सच-झूठ में अंतर करना मुश्किल हो जाए, तो इंसान की सबसे बड़ी पूँजी उसका दीन और ईमान होता है। रसूलुल्लाह (स.अ.व.) ने फरमायाः ''जो व्यक्ति फितनों से बचने के लिए कोई सुरक्षित जगह पाए, उसे वहाँ पनाह ले लेनी चाहिए।'' (सहीह बुखारीः ३६०१, सहीह मुस्लिमः २८८६) हजरत अबू सईद खुदरी (रजि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (स.अ.व.) ने फरमायाः ''वह समय करीब है जब मुसलमान की सबसे अच्छी संपत्ति बकरियाँ होंगी। वह उन्हें लेकर पहाड़ों की चोटियों और बारिश वाली जगहों पर चला जाएगा, ताकि फितनों से अपने दीन की रक्षा कर सके।'' (सहीह बुखारीः १९) इमाम बुखारी (रह.) ने इस हदीस पर यह अध्याय बनायाः 'फितनों से बचना भी दीन का हिस्सा है।' इस शिक्षा का अर्थ केवल दुनिया से अलग होकर बैठ जाना नहीं, बल्कि हर ऐसे माहौल और गतिविधि से बचना है जो ईमान और अखलाक को नुकसान पहुँचाए। चाहे वह राजनीतिक हंगामा हो, वैचारिक भटकाव हो या इच्छाओं और शंकाओं से भरा वातावरण।

(३) ठहराव, सोच-विचार और जल्दबाजी से बचनाः फितनों की एक बड़ी विशेषता यह है कि वे इंसान को तुरंत प्रतिक्रिया देने और भावनाओं में बहकर फैसले करने पर उकसाते हैं। जबकि सलफ सालेहीन का तरीका ठहराव, सोच-विचार और सावधानी पर आधारित था। हजरत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रजि.) फरमाते थे ''कयामत से पहले कुछ ऐसे संदिग्ध मामले सामने आएँगे जिनमें सच और झूठ का अंतर करना मुश्किल होगा। इसलिए तुम्हें ठहराव, धैर्य और सावधानी अपनानी चाहिए।'' (मुसन्नफ इब्न अबी शैबा) सलफ हर मामले में जल्दबाजी के बजाय उसके शरई हुक्म, संभावित परिणाम और उम्मत पर पड़ने वाले प्रभाव को देखते थे।

(४) अपनी इस्लाह को प्राथमिकता देनारू सलफ सालेहीन की एक विशेषता यह थी कि वे दूसरों और समाज की इस्लाह से पहले अपनी इस्लाह पर ध्यान देते थे। वे जानते थे कि जो व्यक्ति अपने नफ्स की तरबियत, ईमान की हिफाजत और अपने अंदर सुधार नहीं कर सकता, वह दूसरों के लिए स्थायी भलाई का जरिया नहीं बन सकता। रसूलुल्लाह (स.अ.व.) ने हजरत अब्दुल्लाह बिन अम्र (रजि०) को नसीहत करते हुए फरमायाः ''तुम अपनी फिक्र करो और आम लोगों के मामलों को छोड़ दो।'' (अस-सिलसिलतुस सहीहाः २०६) इसका अर्थ उम्मत के मामलों से पूरी तरह बेपरवाह होना नहीं है, बल्कि यह सीख देना है कि जब हालात इतने बिगड़ जाएँ कि नसीहत का असर न हो और दखल देने से फसाद बढ़ने लगे, तो सबसे पहले अपने ईमान, परिवार, औलाद और इबादत की हिफाजत करनी चाहिए। सलफ के नजदीक सबसे बड़ी कामयाबी दूसरों पर हावी होना नहीं, बल्कि अपने नफ्स को गुमराही, बुरी इच्छाओं और बेचैनी से बचाना था। इसलिए वे इबादत, दुआ, कुरआन की तिलावत और आत्म-समीक्षा पर विशेष ध्यान देते थे।

(५) सुन्नत और सहाबा के तरीकेध से मजबूती से जुड़े रहनारू फितनों के कठिन दौर में सलफ सालेहीन की सबसे मजबूत पनाहगाह कुरआन, रसूलुल्लाह (स.अ.व.) की सुन्नत और सहाबा की समझ थी। वे भावनात्मक नारों और अपनी अक्ल को अंतिम कसौटी बनाने के बजाय उसी रास्ते पर चलते थे जिस पर शुरुआती बेहतरीन पीढ़ियाँ चली थीं। इमाम औजाई (रह.) फरमाते

हैंः ''अपने आप को सुन्नत पर मजबूती से कघयम रखो और वहीं ठहरो जहाँ सलफ ठहरे थे।'' (अश-शरीअह लिल-आजुरी, भाग २, पृष्ठ ६७३)

फितनों से बचाव के आंतरिक साधनः फितनों के समय इंसान अक्सर बाहरी उपायों की तलाश करता है, जबकि कुरआन, सुन्नत और सलफ के तरीकेे से पता चलता है कि असली सुरक्षा ईमान की मजबूती, दिल की पाकीजगी और अल्लाह से मजबूत संबंध में है।सलफ सालेहीन जानते थे कि बाहरी फसाद का मुकाबला केवल बाहरी उपायों से नहीं हो सकता। इसके लिए इबादत, दुआ, सब्र और अल्लाह पर भरोसा भी जरूरी है। इसी कारण वे फितनों के समय अपने रब से संबंध और मजबूत करते थे।

(१) सब्र और इस्तिकामत में ईमान वालों का सबसे मजबूत सहाराः फितनों के दौर में सबसे पहला और महत्वपूर्ण सहारा सब्र है। सब्र का अर्थ केवल खामोश रहना नहीं, बल्कि ईमान पर कायम रहना, भावनात्मक प्रतिक्रिया से बचना और शरीअत की सीमाओं में रहकर हिकमत के साथ कदम उठाना है। अल्लाह तआला ने बनी इसराईल की कामयाबी को उनके सब्र से जोड़ते हुए फरमायाः ''तुम्हारे रब का अच्छा वादा बनी इसराईल के हकघ में पूरा हुआ, क्योंकि उन्होंने सब्र किया।'' (अल-आराफः १३७) इन शब्दों में गहरी समझ छिपी है। भावनाओं में उठाया गया कदम अक्सर फसाद बढ़ाता है, जबकि सब्र और हिकमत सुधार के रास्ते खोलते हैं।

(२) इबादत में फितनों के अँघेरे में हिदायत का चिरागः जब फितने आम हो जाते हैं तो दिल बेचौन और दिमाग परेशान हो जाते हैं। ऐसे समय में इबादत दिल को सुकून, ईमान को ताजगी और इंसान को संतुलन प्रदान करती है। रसूलुल्लाह (स.अ.व.) ने फरमायाः ''फितना और अफरा-तफरी के समय इबादत करना मेरी ओर हिजरत करने के समान है।''(सहीह मुस्लिमरू २६४८) इस हदीस का संदेश यह है कि जब लोग दुनिया की भागदौड़ और फितनों में उलझे हों, उस समय अल्लाह की इबादत में लग जाना बहुत बड़ी नेकी है। सलफ सालेहीन फितनों के समय जिक्र, रात की नमाज और कुरआन की तिलावत में अधिक समय लगाते थे। नमाज, रोजा, सदका, जिक्र और कुरआन की तिलावत केवल नेक अमल नहीं, बल्कि ईमान की हिफाजत का मजबूत जरिया हैं।

३) दुआ, अल्लाह की पनाह और इस्तिगफारः फितनों से बचने का एक बड़ा जरिया दुआ है। दिल अल्लाह के अधिकार में हैं और वह जैसे चाहे उन्हें फेर सकता है। इसलिए मोमिन को अपने रब के सामने विनम्र होकर दुआ करनी चाहिए और उसी की पनाह माँगनी चाहिए। हजरत जैद बिन साबित (रजि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (स.अ.व.) ने फरमायाः ''अल्लाह से उन सभी फितनों की पनाह माँगो जो खुले हुए हों और जो छिपे हुए हों।'' (सहीह मुस्लिमः २८६७) सहाबा (रजि.) ने भी कहा कि हम खुले और छिपे सभी फितनों से अल्लाह की पनाह माँगते हैं। इसी तरह रसूलुल्लाह (स.अ.व.) को सिखाई गई एक महत्वपूर्ण दुआ हैः ''ऐ अल्लाह! मैं तुझसे नेक काम करने, बुराइयों से बचने और गरीबों से मुहब्बत करने की तौफीक माँगता हूँ। और जब तू अपने बंदों को किसी फितने में डालना चाहे तो मुझे उस फितने में पड़ने से पहले अपने पास बुला लेना।'' (जामे तिर्मिजीः ३२३५)

(४) कुरआन, तौबा और इस्तिगफार की ओर लौटनाः फितनों के दौर में इंसान की सबसे बड़ी पूँजी अल्लाह की ओर लौटना है। कुरआन दिलों का नूर, सोच का मार्गदर्शक और शुबहात तथा शहवात दोनों के लिए शिफा है। अल्लाह

तआला फरमाता है''तुम्हारे पास अल्लाह की ओर से नूर और स्पष्ट किताब आ चुकी है। अल्लाह इसके जरिए अपनी प्रसन्नता चाहने वालों को सलामती के रास्ते दिखाता है।'' (अल-माइदाः १५-१६)इसी तरह इस्तिगफार भी मुसीबतों और अजाब से बचने का एक बड़ा जरिया है। अल्लाह तआला फरमाता हैः ''अल्लाह उन्हें अजाब देने वाला नहीं, जबकि वे उससे माफी माँग रहे हों।'' (अल-अनफालः ३३) इस आयत से पता चलता है कि जब उम्मत सामूहिक रूप से अपने गुनाहों से तौबा करके अल्लाह की ओर लौटती है तो रहमत के दरवाजे खुलते हैं और आजमाइशों की तीव्रता कम होती है। फितनों से सुरक्षित रहना केवल अक्ल और उपायों का नतीजा नहीं, बल्कि अल्लाह की विशेष कृपा और सौभाग्य की निशानी है। रसूलुल्लाह (स.अ.व.) ने फरमायाः ''निस्संदेह भाग्यशाली वह है जिसे फितनों से बचा लिया गया।'' (सुनन अबू दाऊदः ४२६३) नबी करीम (स.अ.व.) ने इस बात को तीन बार दोहराकर स्पष्ट किया कि फितनों के दौर में असली कामयाबी शोहरत, ताकत या अधिक बोलने में नहीं, बल्कि ईमान की सलामती, दिल की मजबूती और दीन पर कायम रहने में है।

❑❑❑

## जमाअती खबरें

**सूबाई जमीयत अहले हदीस, महाराष्ट्र के खजांची और औरंगाबाद की प्रसिद्ध सामाजिक, कल्याणकारी एवं मिल्ली हस्ती जनाब हनीफ इनआमदार साहब को गहरा सदमा :**

यह समाचार अत्यंत दुख और अफसोस के साथ प्राप्त हुआ कि प्रांतीय जमीयत अहले हदीस, महाराष्ट्र के खजांची तथा औरंगाबाद की प्रसिद्ध सामाजिक, कल्याणकारी और मिल्ली हस्ती जनाब हनीफ इनआमदार साहब की बहन का २३ सितंबर २०२६ को दोपहर ढाई बजे लंबी बीमारी के बाद लगभग ८५ वर्ष की आयु में खाई हस्पिटल, औरंगाबाद में निधन हो गया। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन।

मरहूमा नेक, मिलनसार, विनम्र और मेहमाननवाज महिला थीं। वे नियमित रूप से रोजा रखती थीं और नमाज की पाबंद थीं। उनके पति मरहूम जनाब मुहम्मद शरीफ साहब औरंगाबाद की प्रमुख सामाजिक, कल्याणकारी, शैक्षणिक, सुधारवादी और पत्रकारिता से जुड़ी हस्तियों में गिने जाते थे। वे मुकद्दस डेली नाम से एक समाचार पत्र भी प्रकाशित करते थे। उनकी नमाज-ए-जनाजा और दफन का कार्य उसी दिन रात ११ बजे पंच कुआँ कब्रिस्तान, सिटी चौक, औरंगाबाद, महाराष्ट्र में संपन्न हुआ। उनके पीछे एक बेटा जनाब मुहम्मद शफीक साहब, आठ बेटियाँ तथा अनेक पोते-पोतियाँ और नाती-नातिनियाँ रह गई हैं। अल्लाह तआला मरहूमा की मगफिरत फरमाए, उन्हें जन्नतुल फिरदौस में स्थान प्रदान करे तथा उनके परिजनों और संबंधित लोगों, विशेष रूप से जनाब हनीफ इनामदार साहब को सब्र-ए-जमील अता फरमाए। आमीन।(शोक-साझी एवं दुआगोः असगर अली इमाम मेहदी सलफी, अमीर, मरकजी जमीयत अहले हदीस हिंद)

# बीसवीं सदी में बिहार में फारसी भाषा और साहित्य के विकास में विद्वानों का योगदान

*(कान्ट्रिब्यूशन आफ स्कालर्स टू द डेवलपमेंट आफ पर्शियन लैंग्वेज एंड लिटरेचर इन बिहार (ट्वेंटिएथ सेंचुरी)*

*ग़ालिब ज़्याद तैमी*

फारसी भाषा और साहित्य ने कई सदियों तक भारतीय उपमहाद्वीप के सांस्कृतिक, शैक्षणिक, राजनीतिक और प्रशासनिक जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इस्लामी शासन के शुरुआती दौर से लेकर मुगल काल तक फारसी सरकारी कामकाज और पत्राचार की प्रमुख भाषा रही। इसके अलावा इतिहास, शायरी, सूफीवाद, दर्शन और धार्मिक ज्ञान के क्षेत्र में भी इसका व्यापक योगदान रहा। इस परंपरा को आगे बढ़ाने में बिहार का विशेष स्थान रहा है। यहाँ के विद्वानों, सूफी संतों, खघनकाहों, पुस्तकालयों और शैक्षणिक संस्थानों ने फारसी भाषा और साहित्य के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। बिहार में फारसी केवल शिक्षा और सरकारी कामकाज की भाषा नहीं थी, बल्कि यहाँ की सांस्कृतिक और साहित्यिक पहचान का भी एक महत्वपूर्ण हिस्सा थी।

बीसवीं सदी में अंग्रेजी शासन के दौरान सरकारी और शैक्षणिक क्षेत्रों से फारसी का महत्व धीरे-धीरे कम होने लगा। अंग्रेजी के बढ़ते प्रभाव के कारण फारसी अपना पुराना प्रशासनिक स्थान खो बैठी। इसके बावजूद बिहार में इस भाषा की परंपरा समाप्त नहीं हुई। अनेक शिक्षकों, शोधकर्ताओं, कवियों और सूफी विद्वानों ने अपने प्रयासों से इसे जीवित रखा। उन्होंने पुस्तकों का लेखन, अनुवाद, पांडुलिपियों का संपादन और शोध कार्य जारी रखा।

इस दौर में पटना विश्वविद्यालय, मौलाना मजहरुल हक अरबी एवं फारसी विश्वविद्यालय, बिहार विश्वविद्यालय मुजफ्फरपुर, मगध विश्वविद्यालय, तिलका मांझी भागलपुर विश्वविद्यालय और ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय जैसे शैक्षणिक संस्थानों ने फारसी भाषा की शिक्षा और शोध को आगे बढ़ाया। वहीं पटना स्थित अरबी एवं फारसी अनुसंधान संस्थान ने पांडुलिपियों के संपादन और प्राचीन फारसी ग्रंथों के प्रकाशन में महत्वपूर्ण योगदान दिया। इसके साथ ही पटना की खानकाह मुनअमिया कमरिया, फुलवारी शरीफ की खानकाह मुजीबिया, मनेर शरीफ, बिहार शरीफ की खानकाह मखदूमे मुअज्जम, भागलपुर की खानकाह शहबाजिया और सुल्तानगंज की खानकाह शाह अरजानी ने भी फारसी भाषा और साहित्य की परंपरा को बनाए रखने में अहम भूमिका निभाई। ये खानकाहें धार्मिक और आध्यात्मिक केंद्र होने के साथ-साथ शिक्षा और साहित्य के भी महत्वपूर्ण केंद्र थीं। इस प्रकार बीसवीं सदी में अनेक कठिनाइयों के बावजूद बिहार में फारसी भाषा और साहित्य का विकास जारी रहा। विश्वविद्यालयों, शोध संस्थानों, खानकाहों और विद्वानों के संयुक्त प्रयासों ने इस समृद्ध विरासत को सुरक्षित रखा। प्रस्तुत शोध में बीसवीं सदी के दौरान बिहार में फारसी भाषा और साहित्य के संरक्षण एवं विकास में योगदान देने वाले प्रमुख विद्वानों, शोधकर्ताओं, शिक्षकों और साहित्यकारों की सेवाओं का अध्ययन किया गया है। बीसवीं सदी के स्कलर्स और साहित्यकारः बिहार में फारसी भाषा और साहित्य की परंपरा बहुत पुरानी और समृद्ध रही है। यहाँ के कवियों, सूफियों, इतिहासकारों और विद्वानों ने सदियों तक इस भाषा के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया।बीसवीं सदी में फारसी

के सरकारी महत्व में कमी आने के बावजूद बिहार में अनेक विद्वानों और साहित्यकारों ने इस भाषा की सेवा जारी रखी। उन्होंने पुरानी पांडुलिपियों का संपादन किया, शोधपूर्ण पुस्तकें और लेख लिखे, शब्दकोश तैयार किए तथा विद्यार्थियों को शिक्षा देकर फारसी साहित्य की परंपरा को आगे बढ़ाया। इन विद्वानों ने फारसी साहित्य के अलावा इतिहास, सूफीवाद, तसव्वुफ, साहित्यिक आलोचना और भारत-ईरान के सांस्कृतिक संबंधों पर भी महत्वपूर्ण कार्य किए। कुछ विद्वानों ने विश्वविद्यालयों में अध्यापन किया, जबकि कुछ ने शोध संस्थानों और सांस्कृतिक केंद्रों के माध्यम से फारसी अध्ययन को बढ़ावा दिया। इस पीढ़ी के विद्वानों की विशेषता यह थी कि उन्होंने प्राचीन फारसी साहित्य को सुरक्षित रखने के साथ-साथ आधुनिक शोध और शिक्षा की आवश्यकताओं पर भी ध्यान दिया। उनके कार्यों ने पुरानी साहित्यिक परंपरा और आधुनिक शैक्षणिक जगत के बीच एक महत्वपूर्ण संबंध स्थापित किया। प्रस्तुत अध्याय में बीसवीं सदी के बिहार के प्रमुख फारसी शोधकर्ताओं और साहित्यकारों के जीवन, रचनाओं तथा साहित्यिक एवं शैक्षणिक सेवाओं का परिचय दिया गया है। इसका उद्देश्य फारसी भाषा और साहित्य के विकास में उनके योगदान तथा बिहार की साहित्यिक विरासत में उनके स्थान को स्पष्ट करना है।

१. प्रोफेसर मुहम्मद सिद्दीक (१९२८२००० ई.): प्रोफेसर मुहम्मद सिद्दीक, बिहार के प्रसिद्ध शिक्षकों, शायरों, लेखकों और शोधकर्ताओं में गिने जाते हैं। उनका जन्म २ जनवरी १९२८ को जहानाबाद जिले के खूबगंज गाँव में हुआ था। प्रारंभिक शिक्षा उन्होंने अपने गाँव में प्राप्त की। स्कूल की पढ़ाई पूरी करने के बाद १९४२ में उच्च शिक्षा के लिए पटना चले गए। उन्होंने पटना विश्वविद्यालय से फारसी और उर्दू भाषा एवं साहित्य में एम. ए. की डिग्री प्राप्त की। इसके बाद १९६४ में अशरफ माजंदरानी के जीवन और शैक्षणिक सेवाओं पर शोध करके पीएच.डी. की उपाधि हासिल की। (मो. नियाज अहमदः २०१७)

प्रोफेसर मुहम्मद सिद्दीक ने अपने जीवन के तीन दशकों से अधिक समय अध्यापन और शोध कार्यों में बिताया। उन्होंने पटना कॉलेज के फारसी विभाग में लगभग पंद्रह वर्षों तक विभागाध्यक्ष के रूप में सेवा दी। इसके अलावा वे कुछ समय तक पटना कॉलेज के प्राचार्य और अरबी एवं फारसी अनुसंधान संस्थान के निदेशक भी रहे। वे अध्यापन को इबादत मानते थे। फारसी, उर्दू और अंग्रेजी भाषाओं पर उनकी अच्छी पकड़ थी। वे अपने अनुशासन, नैतिकता और गहरे साहित्यिक ज्ञान के कारण विद्यार्थियों और शिक्षकों के बीच बहुत सम्मानित थे। उनके अनेक विद्यार्थी आगे चलकर प्रसिद्ध शिक्षक और शोधकर्ता बने। (मो. नियाज अहमद : २०१७)

शैक्षणिक एवं शोध संबंधी कार्यः प्रोफेसर मुहम्मद सिद्दीक ने फारसी भाषा और साहित्य के क्षेत्र में कई महत्वपूर्ण पुस्तकें और शोधपत्र लिखे। उनकी प्रमुख रचनाएँ निम्नलिखित हैं।

१. अशरफ माजंदरानी का व्यक्तित्व और शैक्षणिक सेवाएँः यह उनकी पीएच.डी. का शोध विषय था। इसमें उन्होंने अशरफ माजंदरानी के जीवन, साहित्यिक योगदान, विचारों और शायरी का विस्तार से अध्ययन किया। साथ ही भारत और ईरान के साहित्यिक संबंधों में उनके स्थान को भी स्पष्ट किया।

२. शोध एवं आलोचनात्मक अध्ययनः इस पुस्तक में उनके सोलह शोधपूर्ण और आलोचनात्मक लेख शामिल हैं। इनमें अमीर खुसरो देहलवी, बिदिल और गालिब जैसे प्रसिद्ध शायरों की साहित्यिक शैली और विचारों का अध्ययन किया गया है। इस पुस्तक में उन्होंने भारतीय उपमहाद्वीप के फारसी शायरों के साहित्यिक और वैचारिक संबंधों को

भी उजागर किया है।

३. शैक्षणिक पुस्तकेंः विद्यार्थियों के लिए उन्होंने फारसीः भाषा सीखने और समझने में आसानी पैदा करने के उद्देश्य से तीन आईना-ए-फारसी, फारसी शकरिन और फारसी शीरीं पुस्तकें लिखीं। इन पुस्तकों की भाषा सरल और शिक्षाप्रद है। इनका उपयोग लंबे समय तक पटना विश्वविद्यालय और भारत के अन्य शैक्षणिक संस्थानों में किया जाता रहा। प्रोफेसर मुहम्मद सिद्दीकध ने फारसी और उर्दू साहित्य पर अनेक शोधपूर्ण लेख लिखे। उनके प्रमुख लेख इस प्रकार हैं।

१. व्यक्तित्व-ए-उर्फीः इस लेख में उन्होंने उर्फी शीराजी के साहित्यिक स्थान का समर्थन किया और ऐतिहासिक एवं साहित्यिक प्रमाणों के आधार पर उन पर लगाए गए गलत आरोपों और आलोचनाओं का खंडन किया। २. गालिब की शृष्टि में कला की अवधारणाः इस लेख में उन्होंने मिर्जा गालिब की रचनाओं में जोश और बुद्धि के संबंध का विश्लेषण किया तथा बताया कि इन दोनों तत्वों का उनकी शायरी की सुंदरता में क्या महत्व है।

३. गालिब की मसनवी श्चराग-ए-दैरश का अध्ययनः इस शोध में उन्होंने गालिब की अपेक्षोंत कम चर्चित मसनवी चराग़-ए-दैर की बनावट, अर्थ, साहित्यिक विशेषताओं और सूफियाना विचारों का विश्लेषण किया। इसके अतिरिक्त उन्होंने उर्दू साहित्यिक आलोचना के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण काम किया। उन्होंने कलीमुद्दीन अहमद और अबुल कलाम आजाद जैसे प्रसिद्ध विद्वानों के विचारों और लेखन का अध्ययन एवं आलोचनात्मक विश्लेषण किया। उनके शोध कार्यों से फारसी और उर्दू दोनों भाषाओं के साहित्य पर उनकी गहरी पकड़ का पता चलता है। उन्होंने तुलनात्मक अध्ययन और साहित्यिक आलोचना के माध्यम से बिहार में फारसी एवं उर्दू साहित्य के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

२. प्रोफेसर सैयद अनवर अहमद (१९३६२०१५ ई.): प्रोफेसर सैयद अनवर अहमद बीसवीं सदी के भारत के प्रसिद्ध ईरानविदों, फारसी साहित्य के शोधकर्ताओं और प्रभावशाली सांस्कृतिक व्यक्तित्वों में से एक थे। उन्होंने उच्च शिक्षा पटना विश्वविद्यालय से प्राप्त की और बाद में उसी विश्वविद्यालय में प्रोफेसर बने। उन्होंने अपने जीवन के कई दशक फारसी भाषा एवं साहित्य की शिक्षा, शोध और उसकी समृद्ध विरासत को सुरक्षित रखने में समर्पित किए।शारीरिक कठिनाइयों और जीवन की विभिन्न परेशानियों के बावजूद प्रोफेसर सैयद अनवर अहमद ने कभी अपने शोध कार्यों को नहीं छोड़ा। उन्होंने पूरी लगन और मेहनत के साथ पांडुलिपि विज्ञान, साहित्य का इतिहास, सूफीवाद और साहित्यिक आलोचना के क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य किए। फारसी, उर्दू और अंग्रेजी भाषाओं पर उनकी अच्छी पकड़ थी। इसी कारण उनके शोध कार्यों को भारत के साथ-साथ दूसरे देशों के विद्वानों ने भी सराहा।उनके शैक्षणिक और शोध कार्यों को मुख्य रूप से चार भागों में बाँटा जा सकता है। १. पांडुलिपियों का संपादन और शोधः उनका सबसे महत्वपूर्ण शोध कार्य मोहनलाल अनीस की पुस्तक 'श्तजकिरा-ए-अनीसुल अहिब्बाश' का संपादन और उस पर टीका लिखना था। यही उनके पीएच. डी. शोध का विषय भी था। इसके लिए उन्होंने खुदाबख्श ओरिएंटल पब्लिक लाइब्रेरी, पटना और अन्य पुस्तकालयों की पांडुलिपियों का सहारा लिया। इस पुस्तक की विस्तृत भूमिका में उन्होंने ९३ शायरों के जीवन और साहित्यिक योगदान का परिचय दिया। साथ ही गजनवी काल से मुगल काल तक भारत में फारसी भाषा और साहित्य के विकास का अध्ययन किया। इस शोध को पूरा करने के लिए उन्होंने कलकत्ता की यात्रा भी की और मोहनलाल अनीस के फारसी दीवान की पांडुलिपियों का अध्ययन किया। उन्होंने गजल, कतआ और रुबाई जैसी विधाओं में शायर की भाषा, शैली और विचारों का

बारीकी से विश्लेषण किया। (पासदारान-ए-जबान-ओ-अदबियात -ए-फारसी दर हिंदः १४०६हिजरी, १६)

२. सूफीवाद और तसव्वुफ पर शोधः उनके शोध का दूसरा महत्वपूर्ण क्षेत्र इस्लामी सूफीवाद और भारतीय उपमहाद्वीप में फारसी साहित्य से उसका संबंध था। इस विषय पर उनकी प्रमुख पुस्तक श्खाध्दिमाते इल्मी व इरफानी मशाइख-ए-सिलसिला-ए-फिरदौसियाश है। इस पुस्तक में उन्होंने फिरदौसिया सिलसिले के पंद्रह प्रमुख सूफी संतों के जीवन, रचनाओं और सेवाओं का अध्ययन किया। उन्होंने बताया कि खानकाहें केवल इबादत और आध्यात्मिक शिक्षा के केंद्र नहीं थीं, बल्कि फारसी भाषा, साहित्य और सूफी ज्ञान के प्रचार-प्रसार में भी उनकी महत्वपूर्ण भूमिका थी। इसके अलावा उन्होंने सूफी ग्रंथों और रिसालों पर भी लेख लिखे तथा कठिन सूफियाना विचारों को सरल भाषा में समझाने का प्रयास किया। (प्रो. अनवर अहमदः २००६)

३. साहित्यिक आलोचना और फारसी साहित्य का सांस्कृतिक अध्ययनः प्रोफेसर अनवर अहमद ने अपने शोध लेखों में लाहौर, दिल्ली और कश्मीर जैसे शहरों में फारसी साहित्य के विकास का अध्ययन किया। उनके अनुसार गजनवी काल में लाहौर भारत में फारसी साहित्य का पहला बड़ा केंद्र था। उन्होंने अबुल फराज रूनि और मसऊद साद सलमान जैसे शायरों की रचनाओं का अध्ययन करके भारत में फारसी लेखन के शुरुआती दौर को स्पष्ट किया इसके अलावा उन्होंने उमर खय्य्याम के बारे में पश्चिमी विद्वानों के विचारों और कश्मीर में रहने वाले ईरानी शायरों पर भी शोध किया। उनका मानना था कि भारत में फारसी साहित्य केवल एक भाषा का इतिहास नहीं है, बल्कि यह भारत और ईरान की साझा सांस्कृतिक विरासत का महत्वपूर्ण हिस्सा है।

४. भारत और ईरान के सांस्कृतिक संबंधों में योगदानः प्रोफेसर सैयद अनवर अहमद ने अपने शोध कार्यों के माध्यम से भारत और ईरान के ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक संबंधों को मजबूत करने का प्रयास किया। वर्ष 1977 में उनकी ईरान की शैक्षणिक यात्रा और वहाँ के शोध संस्थानों से उनका संपर्क उनके ईरान संबंधी अध्ययन का प्रमाण है। उन्होंने कई प्रतिष्ठित शोध पत्रिकाओं में लेख प्रकाशित किए। उनका एक महत्वपूर्ण शोध भारत की स्वतंत्रता के बाद फारसी साहित्य की स्थिति पर था। इसमें उन्होंने मुगल साम्राज्य के पतन के बाद स्थानीय शासकों, नवाबों और सांस्कृतिक परिवारों द्वारा फारसी भाषा को संरक्षण देने की भूमिका का अध्ययन किया। उन्होंने बताया कि मुगल राजनीतिक सत्ता समाप्त होने के बावजूद भारत के अनेक नवाबों, अमीरों और प्रतिष्ठित परिवारों ने फारसी भाषा और साहित्य को संरक्षण देना जारी रखा। इसी कारण फारसी की साहित्यिक परंपरा पूरी तरह समाप्त नहीं हुई।

प्रोफेसर सैयद अनवर अहमद का निधन २०१५ ई. में हुआ। उनके शोध, पुस्तकें और लेख आज भी भारत में फारसी भाषा और ईरान संबंधी अध्ययन के महत्वपूर्ण स्रोत हैं। उन्होंने अपने ज्ञान और मेहनत से भारत-ईरान की साझा साहित्यिक एवं सांस्कृतिक विरासत को सुरक्षित रखने में उल्लेखनीय योगदान दिया।(प्रो. अनवर अहमदः२००६)

इन दोनों विद्वानों के जीवन और साहित्यिक योगदान से स्पष्ट होता है कि बीसवीं सदी में बिहार में फारसी भाषा और साहित्य के विकास में शिक्षकों, शोधकर्ताओं और साहित्यकारों की महत्वपूर्ण भूमिका रही। उन्होंने शिक्षण, शोध, आलोचना, पांडुलिपि संपादन और साहित्यिक रचनाओं के माध्यम से फारसी भाषा और साहित्य की परंपरा को समृद्ध किया।

❑❑❑

रिपोर्टः डा. मुहम्मद शीस इदरीस तैमी, विभागः संगठन

# मर्कजी जमीयत अहले हदीस हिंद की कार्यकारिणी की महत्वपूर्ण बैठक सफलतापूर्वक संपन्न, देश और मिल्लत के कल्याण से जुड़े विभिन्न मुद्दों पर विचार-विमर्श तथा ३६वें अल इंडिया अहले हदीस सम्मेलन के आयोजन को मंजूरी।

मर्कजी जमीयत अहले हदीस हिंद की कार्यकारिणी की यह महत्वपूर्ण बैठक २ नवंबर २०२६ को अहले हदीस काम्प्लेक्स, ओखला, नई दिल्ली में मर्कजी जमीयत अहले हदीस हिंद के अमीर मौलाना असगर अली इमाम महदी सलफी की अध यक्षता में आयोजित हुई। इसमें देश के लगभग सभी राज्यों से आए कार्यकारिणी के सम्मानित सदस्यों और सूबाई जमीयतों के जिम्मेदारों ने भाग लिया। बैठक का एजेंडा निम्नलिखित थारू

१. अमीर का संबोधन।

२. पिछली बैठक की कार्यवाही का पाठ और उसकी पुष्टि।

३. नाजिम-ए-उमूमी की रिपोर्ट।

४. वर्तमान परिस्थितियों और भावी कार्ययोजना पर विचार-विमर्श।

५. दावती एवं संगठनात्मक समस्याओं पर चर्चा।

६. अहले हदीस कम्प्लेक्स में निर्माण कार्य की प्रगति रिपोर्ट और उसके लिए आर्थिक संसाधनों की समीक्षा।

७. ३६वें अल इंडिया अहले हदीस सम्मेलन के आयोजन पर विचार-विमर्श।

८. जमीयत की आर्थिक स्थिति को मजबूत बनाने पर चर्चा।

(९).बैठक के एजेंडे में नौवाँ विषय अध्यक्ष की अनुमति से अन्य मुद्दों पर चर्चा करना था।

बैठक की शुरुआत मौलाना ताहा सईद खालिद उमरी, नायब अमीर सूबाई जमीयत अहले हदीस ओडिशा की तिलावत-ए-कुरआन से हुई। इसके बाद अमीर मौलाना असगर अली इमाम महदी सलफी ने अध्यक्षीय भाषण दिया। उन्होंने कार्यकारिणी के सभी सम्मानित सदस्यों और सूबाई जमीयतों के जिम्मेदारों का स्वागत किया तथा बैठक में शामिल होने के लिए उनका दिल से शुक्रिया अदा किया। अपने भाषण में उन्होंने ईमान और अकीदे की हिफाजत, दीन की पहचान बनाए रखने, तौहीद और सुन्नत की दावत देने, आपसी एकता और भाईचारा बढ़ाने, शिक्षा और प्रशिक्षण, युवाओं की अच्छी तरबियत, देश के मौजूदा हालात, संविधान के अनुसार नागरिकों की जिम्मेदारियों, सामाजिक सेवा, महिलाओं की धार्मिक शिक्षा और समाज में उनकी भूमिका जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर बात की। इसके अलावा उन्होंने मीडिया, पत्रकारिता और सोशल मीडिया में जमीयत की प्रभावी भागीदारी की जरूरत पर भी जोर दिया। उन्होंने कहा कि फितनों, युद्ध और लड़ाई के इस दौर में कुरआन और सुन्नत तथा सलफ सालेहीन के तरीकेे के अनुसार जीवन बिताना चाहिए। ऐसे समय में समझदारी, इंसानी हमदर्दी और संविधान का सम्मान करना चाहिए तथा फितने और फसाद से बचना चाहिए। इसके बाद मरकजी जमीयत अहले हदीस हिंद के नाजिम-ए-उमूमी मौलाना मुहम्मद हारून सनाबली ने पिछली बैठक की

कार्यवाही पढ़कर सुनाई, जिसे सभी सदस्यों ने मंजूर किया। फिर मरकजी जमीयत के कामकाज की रिपोर्ट पेश की गई। सदस्यों ने इस पर संतोष और खुशी जताई। बैठक में नाजिम-ए-मालियात हाजी वकील परवेज ने निर्माण कार्य की रिपोर्ट पेश की। सदस्यों ने इस रिपोर्ट पर भी संतोष व्यक्त किया।

बैठक में कई महत्वपूर्ण मुद्दों पर चर्चा हुई। इनमें ३६वें अल इंडिया अहले हदीस सम्मेलन के आयोजन को मंजूरी दी गई। साथ ही अहले हदीस कम्प्लेक्स में बन रही बड़ी इमारत को पूरा करने के लिए देशभर की मस्जिदों के माध्यम से लोगों से आर्थिक सहयोग लेने का फैसला किया गया।

बैठक में मिल्लत, जमीयत, देश और दुनिया से जुड़े कई महत्वपूर्ण मुद्दों पर प्रस्ताव रखे गए, जिन्हें सभी सदस्यों ने सर्वसम्मति से मंजूर किया।

आज के समय में अकघीदा-ए-तौहीद की अहमियत को देखते हुए उलमा-ए-किराम से अपील की गई कि वे अपने भाषणों, लेखों और नसीहतों में तौहीद को विशेष महत्व दें। रसूलुल्लाह (स.अ.व.) के जीवन और सहाबा किराम के तरीकेघ को सामने रखें। आपसी फूट और झगड़ों से बचें तथा मस्लकी और वैचारिक मतभेदों को भुलाकर एकता और भाईचारे के साथ रहें। एक-दूसरे के खिलाफ ऐसी बातें न कहें जिनसे किसी को दुख पहुँचे।

बैठक में देश में बढ़ती महँगाई, बेरोजगारी, अशिक्षा, नैतिक गिरावट, गरीबों का शोषण और रिश्वतखोरी पर गहरी चिंता जताई गई। इसके अलावा शराब, नशीले पदार्थों, अश्लीलता और दहेज की बढ़ती समस्या पर भी चिंता व्यक्त की गई। आम लोगों और जिम्मेदार व्यक्तियों से अपील की गई कि वे इन बुराइयों को रोकने के लिए आगे आएँ।

मीडिया और पत्रकारिता से अपील की गई कि वे लोकतंत्र के चौथे स्तंभ के रूप में देश की तरक्की और विकास में अपनी अच्छी भूमिका निभाएँ तथा लोगों तक सही जानकारी पहुँचाएँ।

बैठक में देश की एकता, आपसी भाईचारे, सभी धर्मों के लोगों के बीच अच्छे संबंध, एक-दूसरे के सम्मान और शांति बनाए रखने पर जोर दिया गया। कहा गया कि ये बातें देश की तरक्की के लिए बहुत जरूरी हैं। सभी लोगों से हिंसा और नफरत से दूर रहने की अपील की गई।अंत में आतंकवाद के हर रूप की निंदा करते हुए कहा गया कि आतंकवाद इस्लामी शिक्षाओं के खिलाफ है और यह एक कायरतापूर्ण तथा अमानवीय काम है। लोगों से शांति, भाईचारे और इंसानियत की भलाई के लिए काम करने की अपील की गई।

कार्यकारिणी की इस बैठक में देश के विभिन्न हिस्सों में मस्जिदों को तोड़े जाने पर गहरी चिंता व्यक्त की गई। साथ ही मदरसा बोर्ड की स्थिति कमजोर करने और मदरसों से जुड़े लोगों को परेशान करने पर संबंधित सरकारों से अपील की गई कि वे संविधान द्वारा अल्पसंख्यकों को दिए गए धार्मिक और शैक्षणिक अधिकारों का सम्मान करें।

इसी तरह देश के विभिन्न राज्यों में यूनिफर्म सिविल कोड (समान नागरिक संहिता) लागू करने को संविधान द्वारा अल्पसंख्यकों को दिए गए पर्सनल ल में दखलंदाजी बताया गया और सरकार से इस पर दोबारा विचार करने की अपील की गई। इसके अलावा राष्ट्रीय गौरव संशोधन विधेयक २०२६ के माध्यम से वंदे मातरम् को अनिवार्य किए जाने पर गहरी चिंता व्यक्त की गई। कहा गया कि यह अकघीदा-ए-तौहीद के विरुद्ध है।

बैठक में एसआईआर के नाम पर मतदाता सूची से बड़ी संख्या में अल्पसंख्यकों, विशेषकर मुसलमानों के नाम हटाए जाने को लोकतंत्र के खिलाफ बताया गया। साथ ही सभी नागरिकों, खासकर मुसलमानों से अपील की गई कि वे एसआईआर और जनगणना की प्रक्रिया में बढ़-चढ़कर हिस्सा लें।

इसी तरह प्रस्ताव में मरकजी जमीयत अहले हदीस हिंद के तत्वावधान में अहले हदीस कम्प्लेक्स में आयोजित दो दिवसीय २२वें भव्य अल इंडिया हिफ्ज, तजवीद और तफसीर-ए-कुरआन प्रतियोगिता के सफल आयोजन पर जमीयत के सभी जिम्मेदारों, विशेषकर अमीर महोदय को दिल से मुबारकबाद दी गई।

प्रस्ताव में बिलाद-ए-हरमैन शरीफैन के विभिन्न स्थानों, विशेषकर शाह खालिद अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर हौथियों के आतंकवादी हमलों की कड़ी निंदा की गई। साथ ही कहा गया कि हरमैन शरीफैन की पवित्रता और सम्मान को किसी भी तरह ठेस नहीं पहुँचाई जानी चाहिए।

फिलिस्तीन में इजराइल की आक्रामक कार्रवाई और अत्याचारों की भी कड़ी निंदा की गई। प्रस्ताव में कहा गया कि बातचीत करना अच्छी बात है, लेकिन बातचीत, युद्ध और युद्धविराम के नाम पर फिलिस्तीन के मूल मुद्दे को पीछे नहीं धकेला जाना चाहिए। इस पर गहरी चिंता व्यक्त की गई। अंत में देश, मिल्लत और जमीयत की महत्वपूर्ण हस्तियों के निधन पर दुख व्यक्त किया गया तथा उनके लिए मगफिरत और बुलंद दर्जों की दुआ की गई।

**प्रस्ताव का पाठः**

मर्कजी जमीयत अहले हदीस हिंद की कार्यकारिणी की यह बैठक वर्तमान समय में अकीदा-ए-तौहीद की अहमियत, जरूरत और उपयोगिता को देखते हुए उलमा-ए-किराम से अपील करती है कि वे अपने भाषणों, लेखों, दरस, उपदेशों तथा दावत और तब्लीग में अकीदा-ए-तौहीद को प्राथमिकता दें। क्योंकि कठिन परिस्थितियों में सभी अंबिया-ए-किराम और विशेष रूप से आखिरी नबी मुहम्मद (स.अ.व) ने इसी अकधिदे की दावत देकर इंसानियत की भलाई और दोनों जहानों की कामयाबी के लिए संघर्ष किया। अकीदा-ए-तौहीद और उसकी दावत में ही इंसानियत की भलाई, कामयाबी, शांति, भाईचारे और प्रेम का राज छिपा हुआ है।

मर्कजी जमीयत अहले हदीस हिंद की कार्यकारिणी की यह बैठक जमीयत के सभी साथियों से अपील करती है कि वे रसूलुल्लाह (स.अ.व) के आदर्श जीवन और सहाबा किराम की समझ तथा उनके तरीकेे को सामने रखें और अपने बीच किसी भी तरह की फूट और मतभेद को जगह न दें। यह बैठक उम्मत, मिल्लत, जमीयत और देश में किसी भी तरह के मतभेद और झगड़े को बहुत नुकसानदेह मानती है। विशेष रूप से उलमा और दावत का काम करने वालों के लिए इस बात का ध्यान रखना बहुत जरूरी है।

मर्कजी जमीयत अहले हदीस हिंद की कार्यकारिणी की यह बैठक उलमा से अपील करती है कि वे मस्लकी और वैचारिक मतभेदों से ऊपर उठकर एकता, भाईचारे और आपसी सहनशीलता का परिचय दें। एक-दूसरे के खिलाफ ऐसी भाषा का इस्तेमाल न करें जिससे किसी को ठेस पहुँचे। साथ ही यह भी अपील की जाती है कि वे मिल्लत के नाम पर ऐसी कोशिशों और साजिशों का हिस्सा न बनें जिनसे इस्लाम और देश के दुश्मनों को ताकत मिले और उन्हें मुसलमानों के खिलाफ एकजुट होने का मौका मिले।

कार्यकारिणी की यह बैठक देश में लगातार बढ़ती महँगाई, बेरोजगारी, अशिक्षा, नैतिक गिरावट, सामाजिक शोषण और रिश्वतखोरी पर गहरी चिंता व्यक्त करती है। इसके अलावा शराबखोरी, नशीले पदार्थों के इस्तेमाल, अश्लीलता और दहेज की बढ़ती प्रथा पर भी चिंता जताती है। बैठक सरकारों तथा आम और खास सभी लोगों से अपील करती है कि इन बुराइयों को रोकने के लिए आगे आएँ और उचित कदम उठाएँ।

यह बात सभी मानते हैं कि शिक्षा और प्रशिक्षण ही हर तरह की तरक्की की सबसे बड़ी कुंजी है। इसी के माध्यम से समाज में सुधार और विकास के रास्ते खुलते हैं। इसलिए कार्यकारिणी की यह बैठक

सभी मुसलमानों से अपील करती है कि वे नई पीढ़ी की शिक्षा और तरबियत पर विशेष ध्यान दें तथा अपने बच्चों को अच्छी और नैतिक मूल्यों पर आधारित शिक्षा दें। इसके अलावा मस्जिदों और मकतबों में सुबह और शाम की शिक्षा एवं तरबियत का इंतजाम करें, ताकि नई पीढ़ी का दीन और अकीदे से जुड़ाव बना रहे और उन्हें इस्लाम की बुनियादी शिक्षाओं की जानकारी मिल सके।

कार्यकारिणी की यह बैठक कुछ मीडिया संस्थानों के पक्षपातपूर्ण रवैये पर चिंता व्यक्त करती है और उनसे अपील करती है कि वे लोकतंत्र के चौथे स्तंभ के रूप में देश के निर्माण और विकास में अपनी सही भूमिका निभाएँ। कुछ खास लोगों का पक्ष लेने के बजाय सच्चाई और इंसाफ का साथ दें, ताकि मीडिया पर जनता का भरोसा बना रहे।

कार्यकारिणी की यह बैठक देश में राष्ट्रीय एकता, सांप्रदायिक सद्भाव, आपसी मेल-मिलाप, भाईचारे, सहनशीलता, एक-दूसरे के सम्मान और शांति बनाए रखने की जरूरत पर जोर देती है। इन बातों को देश के निर्माण और विकास का महत्वपूर्ण आधार बताते हुए सभी लोगों से हिंसा और नफरत से दूर रहने की अपील करती है। साथ ही आतंकवाद के हर रूप को इस्लामी शिक्षाओं के विरुद्ध बताते हुए इसकी कड़ी निंदा करती है और इसे कायरतापूर्ण तथा अमानवीय कार्य मानती है।

कार्यकारिणी की यह बैठक देश की विभिन्न जेलों में बंद मुस्लिम युवाओं के मुकदमों का जल्द से जल्द फैसला करने की जरूरत पर जोर देती है। साथ ही सरकारों से अपील करती है कि जिन युवाओं को ऊपरी अदालतों ने बरी कर दिया है, उन्हें उचित मुआवजा देने का इंतजाम किया जाए, ताकि वे अपनी जिंदगी की नई शुरुआत कर सकें।

कार्यकारिणी की यह बैठक वक्फ़ संशोधन कानून के अनुसार वक्फ़ की संपत्तियों के मालिकों और मुतवल्लियों से अपील करती है कि वे बची हुई वक्फ़ की जमीनों का वक्फ़ पोर्टल पर पंजीकरण जरूर कराएँ। इसके लिए हर संभव कानूनी उपाय अपनाएँ, ताकि वक्फ़ की संपत्तियों की सुरक्षा सुनिश्चित हो सके।

कार्यकारिणी की यह बैठक देश के विभिन्न हिस्सों में मस्जिदों को तोड़े जाने पर गहरी चिंता व्यक्त करती है। साथ ही मदरसा बोर्ड की स्थिति कमजोर करने और मदरसों से जुड़े लोगों को परेशान करने पर संबंधित सरकारों से अपील करती है कि वे संविधान द्वारा अल्पसंख्यकों को दिए गए धार्मिक और शैक्षणिक अधिकारों का सम्मान करें।

कार्यकारिणी की यह बैठक देश के विभिन्न राज्यों में यूनिफर्म सिविल कोड (समान नागरिक संहिता) लागू करने को संविधान द्वारा अल्पसंख्यकों को दिए गए पर्सनल ल में दखलंदाजी मानती है और सरकार से इस पर दोबारा विचार करने की अपील करती है। इसके अलावा राष्ट्रीय गौरव संशोधन विधेयक २०२६ के माध्यम से वंदे मातरम् को अनिवार्य किए जाने पर गहरी चिंता व्यक्त करती है, क्योंकि यह मुसलमानों के अकघीदा-ए-तौहीद के विरुद्ध है। बैठक इस विधेयक को नागरिकों की धार्मिक स्वतंत्रता के खिलाफ मानते हुए इसे समाप्त करने की अपील करती है।

कार्यकारिणी की यह बैठक देश के विभिन्न हिस्सों, विशेष रूप से असम में आई विनाशकारी बाढ़ पर दुख और अफसोस व्यक्त करती है, जिसमें बड़े पैमाने पर जान-माल का नुकसान हुआ। बैठक बाढ़ पीड़ितों और मुसीबत में फँसे लोगों के प्रति एकजुटता व्यक्त करती है तथा वहाँ के लोगों की सराहना करती है कि उन्होंने आपसी भाईचारे और सांप्रदायिक सद्भाव बनाए रखते हुए इस कठिन समय का सामना किया। इसी तरह पड़ोसी देश नेपाल में आई विनाशकारी बाढ़ पर भी दुख व्यक्त करती है और उसमें मारे गए लोगों के परिजनों के प्रति संवेदना

प्रकट करती है।

ध मजलिस-ए-आमिला का यह अधिवेशन एसआईआर के नाम पर मतदाता सूची से बड़ी संख्या में मतदाताओं, विशेषकर मुसलमानों के नाम हटाए जाने की कड़ी निंदा करता है। साथ ही मुसलमानों से अपील करता है कि वे एसआईआर और जनगणना की प्रक्रिया में बढ़-चढ़कर हिस्सा लें। यह अधि ावेशन चुनाव आयोग से संबंधित खबरों पर भी गहरी चिंता व्यक्त करता है।

मजलिस-ए-आमिला का यह अधिवेशन मर्कजी जमीयत अहले हदीस हिंद के तत्वावधान में अहले हदीस काम्प्लेक्स में आयोजित दो दिवसीय २२वें भव्य अल इंडिया कुरआन करीम हिफ्ज, तजवीद और तफसीर मुकाबले के आयोजन पर मरकजी जमीयत अहले हदीस हिंद के जिम्मेदारों, विशेष रूप से माननीय अमीर साहब को दिली मुबारकबाद पेश करता है। साथ ही इस कार्यक्रम की अहमियत, जरूरत और उपयोगिता को देखते हुए इसे आगे भी नियमित रूप से जारी रखने पर जोर देता है।

मजलिस-ए-आमिला का यह अधिवेशन बिलाद-ए-हरमैन शरीफैन के विभिन्न स्थानों, विशेषकर शाह खालिद इंटरनेशनल एयरपोर्ट पर हूती विद्रोहियों द्वारा किए गए आतंकवादी हमलों की कड़ी निंदा करता है और उनसे अपील करता है कि वे बिलाद-ए-हरमैन की पवित्रता और सम्मान को ठेस न पहुँचाएँ, क्योंकि यह इस्लामी शिक्षाओं के विरुद्ध है और पूरे इस्लामी जगत की भावनाओं को आहत करने वाला है। साथ ही यह अधिवेशन सऊदी अरब के शासक शाह सलमान बिन अब्दुल अजीज आले सऊद और युवराज शहजादा मुहम्मद बिन सलमान आले सऊद के धैर्य और सहनशीलता की सराहना करता है तथा बिलाद-ए- हरमैन की सुरक्षा के लिए उनके द्वारा उठाए गए सभी कदमों का पुरजोर समर्थन करता है।

ध मजलिस-ए-आमिला का यह अधिवेशन फिलिस्तीन में इजराइल की आक्रामकता, अत्याचार और जुल्म की कड़ी निंदा करता है। साथ ही बातचीत, युद्ध और युद्धविराम के नाम पर जिस तरह फिलिस्तीन के मुद्दे को पीछे धकेला जा रहा है, उसकी भी निंदा करता है।

मजलिस-ए-आमिला का यह अधिवेशन सूबाई जमीयत अहले हदीस झारखंड के नायब नाजिम और अल-जामिया अल-इस्लामिया अस-सलफिया, अब्दुल्लाहपुर, साहिबगंज के शिक्षक प्रसिद्ध आलिम-ए-दीन मौलाना शम्सुल हकध सलफी साहब की माता जीय जिला जमीयत अहले हदीस मालदा, पश्चिम बंगाल के नायब अमीर प्रसिद्ध आलिम-ए-दीन मौलाना जहीरुद्दीन नदवी साहब के पिता जनाब बशीर अहमद साहबय मर्कजी जमीयत अहले हदीस हिंद के संरक्षक, भारत के प्रमुख और प्रसिद्ध शिक्षण संस्थान जामिया अबू हुरैरा अल-इस्लामिया, लालगोपालगंज, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश के संस्थापक एवं अध्यक्ष तथा इस्लामी जगत की प्रतिष्ठित शैक्षणिक और दावती हस्ती प्रोफेसर डक्टर अब्दुर्रहमान बिन अब्दुल जब्बार फिरयावी साहब की बहन के दामाद और जामिया अबू हुरैरा अल-इस्लामिया, लालगोपालगंज के पुराने कर्मचारी मुहम्मद अकरम साहबय जामिया हफ्सा लिल-बनात, बाबुआन बिस्मतिया, अररिया, बिहार के निदेशक डक्टर अमानुल्लाह मदनी साहब के पिता और डाक्टर अलाउद्दीन सलफी साहब के चाचा जनाब अल्हाज मुहम्मद इस्माइल साहबय भारत के प्रसिद्ध धार्मिक शिक्षण संस्थान जामिया इस्लामिया सनाबिल, नई दिल्ली के शिक्षक और प्रसिद्ध आलिम-ए-दीन मौलाना मुतीउल्लाह मदनी साहब की माता जीय डक्टर हाफिज फहदुल इस्लाम सलफी साहब के चाचा जनाब जहांगीर सिद्दीकी साहबय सूबाई जमीयत अहले हदीस पूर्वी उत्तर

प्रदेश के पूर्व नायब अमीर, मरकजी दारुल उलूम जामिया सलफिया, बनारस के पूर्व शिक्षक, तैयब शाह जामा मस्जिद, बनारस के पूर्व इमाम व खतीब और कुरआन करीम के सुरीले कारी मौलाना अब्दुर्रहीम मदनी बनारसी साहबय मर्कजी दारुल उलूम जामिया सलफिया, बनारस के पूर्व शैखुल हदीस और उस्तादुल असातिजा मौलाना शम्सुल हक सलफी रहमतुल्लाह की पत्नी तथा इस्लामी जगत के प्रसिद्ध शोधकर्ता डक्टर उजैर शम्स रहमतुल्लाह की माता जीय मर्कजी जमीयत अहले हदीस हिंद की मजलिस-ए-आमिला के सम्मानित सदस्य मौलाना मंजर अहसन सलफी साहब के बड़े साले जनाब कमरुल हुदा साहबय मरकजी जमीयत अहले हदीस हिंद की शूरा के पूर्व सदस्य, जमीयत के बुजुर्ग आलिम और प्रसिद्ध खघ्तीब कघरी नजमुल हसन फैजी साहब की पत्नीय मर्कजी जमीयत अहले हदीस हिंद के शोबा-ए-दावत व इरशाद के सहायक जनाब अनवर अब्दुल कय्यूम अंसारी साहबय सूबाई जमीयत अहले हदीस पश्चिम बंगाल के अमीर मौलाना शमीम अख्तर नदवी साहब के युवा साले हाफिज रबीउल इस्लाम साहबय मर्कजी जमीयत अहले हदीस हिंद के कर्मचारी मौलाना मुहम्मद अहमद सलफी साहब के ससुर जनाब अब्दुल बारी बिन मुहम्मद मुनीर साहबय मरकजी जमीयत अहले हदीस हिंद की शूरा के पूर्व सदस्य डाक्टर फजलुर्रहमान मदनी रहमतुल्लाह के युवा मंझले बेटे अहमद फजलुर्रहमान मुहम्मदी साहबय मरकजी जमीयत अहले हदीस हिंद की शूरा के सदस्य मौलाना कलीमुल्लाह सलफी साहब के बड़े भाई जनाब शिफाउल्लाह साहब की पत्नीय मर्कजी जमीयत अहले हदीस हिंद की शूरा के सम्मानित सदस्य मौलाना अब्दुर्रहमान बिन शैखुल हदीस अल्लामा उबैदुल्लाह मुबारकपुरी साहब के बड़े बेटे मौलाना जुहैर अब्दुर्रहमान मदनी साहबय जमीयत शुब्बानुल मुस्लिमीन, बजरडीहा, बनारस के अध्यक्ष और प्रसिद्ध सामाजिक, सामुदायिक एवं कल्याणकारी कार्यकर्ता जनाब मुहम्मद आरिफ साहब की पत्नीय चांचल, मालदा, पश्चिम बंगाल के अत्यंत बुजुर्ग आलिम-ए-दीन शैखुल हदीस मौलाना मुहम्मद अब्दुर्रज्जाक बिन सिद्दीकघ हुसैन सलफी आलियावी साहबय आगरा की प्रसिद्ध और सम्मानित सामाजिक एवं सामुदायिक हस्ती मरहूम अल्हाज मुहम्मद ईसा साहब की पत्नी तथा जनाब मुहम्मद इदरीस अंसारी साहब की माता जीय सूबाई जमीयत अहले हदीस ओडिशा के पूर्व अमीर और जमीयत की बुजुर्ग हस्ती मास्टर हिदायतुल्लाह बुखधारी साहबय मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार के उर्दू विभाग के पूर्व अध्यक्ष, प्रसिद्ध विद्वान, साहित्यकार और सामुदायिक हस्ती प्रोफेसर हाफिज अनीस सदरी साहबय पटना इस्लामिक रिसर्च सेंटर के प्रमुख डाक्टर हाफिज फहदुल इस्लाम सलफी साहब के पिता जनाब रजाउल्लाह सिद्दीकी साहबय प्रसिद्ध धार्मिक शिक्षण संस्थान जामिया इस्लामिया, दरियाबाद, उत्तर प्रदेश के उपाध्यक्ष, पुराने धार्मिक शिक्षण संस्थान जामिया आलिया अरबिया, मऊ के पूर्व शिक्षक और जामिया इमाम मुहम्मद बिन सऊद इस्लामिया, रियाज के पूर्व शिक्षक डक्टर अब्दुल बारी फतहुल्लाह मदनी साहब के छोटे भाई मौलाना अबुल हाशिम दरियाबादी आलियावी साहबय प्रसिद्ध शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थानों जामिया अल-फलाह और जामिया अल-मुफलिहात, हैदराबाद के शिक्षक डाक्टर अब्दुल मुईद मदनी साहब के पिता तथा डाभा कुंद, झारखंड के प्रसिद्ध चिकित्सक और धार्मिक, दावती एवं सामाजिक हस्ती डक्टर नौशाद आलम साहब सहित अन्य लोगों के निधन पर गहरा दुख और शोक व्यक्त करता है।

यह अधिवेशन उन सभी दिवंगत लोगों की मगफिरत और जन्नतुल फिरदौस में ऊँचा स्थान मिलने की दुआ करता है। आमीन।

❑❑❑

# मर्कज़ी जमीयत की प्रेस रिलीज़

**माह रबीउल आखिर १४४८ हिजरी का चाँद नजर नहीं आयाः**

दिल्लीः १२ सितंबर २०२६

मर्कजी जमीयत अहले हदीस हिंद की मर्कजी अहले हदीस रूयत-ए-हिलाल कमेटी, दिल्ली की ओर से जारी प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, आज २९ रबीउल अव्वल १४४८ हिजरी, मुताबिक १२ सितंबर २०२६, शनिवार को नमाज-ए-मगरिब के बाद अहले हदीस कम्प्लेक्स, अबुल फजल एन्क्लेव, नई दिल्ली में मरकजी अहले हदीस रूयत-ए-हिलाल कमेटी, दिल्ली की एक महत्वपूर्ण बैठक आयोजित हुई। माह रबीउल आखिर का चाँद देखने के संबंध में परंपरा के अनुसार देश के अधिकांश राज्यों के जिम्मेदारों और मिल्ली संगठनों से फोन के माध्यम से संपर्क किया गया, लेकिन कहीं से भी चाँद दिखाई देने की कोई प्रमाणित और विश्वसनीय सूचना प्राप्त नहीं हुई। इसलिए मरकजी अहले हदीस रूयत-ए-हिलाल कमेटी, दिल्ली ने निर्णय लिया कि कल रविवार को माह रबीउल अव्वल की ३० तारीख होगी। इंशाअल्लाह।

**मर्कजी जमीयत अहले हदीस हिंद का दूसरा उच्चस्तरीय राहत दल असम के बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों के दौरे पर :**

१२ सितंबर २०२६,

मर्कजी जमीयत अहले हदीस हिंद के अमीर मौलाना असगर अली इमाम मेहदी सलफी और नाजिम-ए-उमूमी मौलाना मुहम्मद हारून सनाबली के नेतृत्व में मरकजी जमीयत का एक उच्चस्तरीय राहत दल असम के दौरे पर है। इस दल में प्रांतीय जमीयत अहले हदीस मुंबई के नायब अमीर अब्दुल हमीद खान और नाजिम मौलाना अब्दुर्रशीद सलफी भी शामिल हैं। वहीं, प्रांतीय जमीयत अहले हदीस असम के अमीर मौलाना हिफ्जुर्रहमान मदनी और अन्य जिम्मेदार लोग इस दौरे में मार्गदर्शन कर रहे हैं। मर्कजी जमीयत अहले हदीस हिंद की ओर से मीडिया को जारी बयान में बताया गया कि यह दौरा १६ सितंबर २०२६ से शुरू होकर २२ सितंबर २०२६ तक जारी रहेगा।

प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, मरकजी जमीयत के उच्चस्तरीय राहत दल ने असम के बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों का दौरा किया और वहाँ की ताजा स्थिति की जानकारी प्राप्त की। दल के सदस्यों ने प्रभावित लोगों से मुलाकात कर उन्हें सांत्वना दी तथा उनके बीच चेक और नकद राशि के रूप में राहत वितरित की। मरकजी जमीयत का यह दल १६ सितंबर की शाम जोरहाट पहुँच गया था। इसके बाद प्रांतीय जमीयत अहले हदीस असम के साथ मिलकर प्रभावित क्षेत्रों का दौरा किया गया। २० सितंबर को सुबह से दोपहर तक राहत वितरण का कार्य किया गया। २१ सितंबर को भी मरकजी जमीयत के नेतृत्व, प्रांतीय जमीयत असम के मार्गदर्शन और प्रांतीय जमीयत मुंबई के सहयोग से अन्य प्रभावित क्षेत्रों में राहत कार्य जारी रखा गया। इस राहत दल ने जिन बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों का दौरा किया, उनमें शिवसागर जिले के नेपाली कोठी, संतोक, बिहुबोर और सिंगल बस्ती आदि प्रमुख हैं। इस प्रतिष्ठित राहत दल का उद्देश्य अन्य प्रभावित क्षेत्रों का दौरा करना, पीड़ितों के बीच राहत सामग्री वितरित करना और उनके पुनर्वास के लिए आवश्यक प्रयास करना भी है। यह दौरा अगले दिन तक जारी रहेगा।

उल्लेखनीय है कि मर्कजी जमीयत अहले हदीस हिंद के उच्चस्तरीय राहत दल ने बाढ़ आने के तुरंत बाद भी असम के प्रभावित क्षेत्रों का दौरा किया था। उस समय जरूरतमंदों के बीच आवश्यक वस्तुएँ वितरित की गई थीं तथा उनके खाने-पीने आदि की व्यवस्था की गई थी। भविष्य में भी कुछ नए प्रभावित क्षेत्रों में शेष राहत सामग्री पहुँचाने के लिए एक दल असम रवाना होगा। इंशाअल्लाह। इस राहत दल

में मर्कजी जमीयत अहले हदीस हिंद के अमीर मौलाना असगर अली इमाम मेहदी और नाजिम-ए-उमूमी मौलाना मुहम्मद हारून सनाबली भी शामिल थे। इसी प्रकार मरकजी जमीयत के सहयोग से प्रांतीय जमीयत अहले हदीस असम के जिम्मेदारों ने भी प्रभावित क्षेत्रों का विशेष दौरा किया था और पीड़ितों के बीच राहत सामग्री वितरित की थी।

**मदीना मुनव्वरह में वैचारिक भटकाव की रोकथाम पर अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित**

**इस्लामी दुनिया की प्रमुख शैक्षणिक एवं धार्मिक हस्तियों के साथ अमीर महोदय की भागीदारीय भाईचारे और संतुलित विचारध ारा के संदेश पर जोर**

दिल्लीः ३ अक्टूबर २०२६,

मर्कजी जमीयत अहले हदीस हिंद की ओर से जारी प्रेस विज्ञप्ति में बताया गया है कि मर्कजी जमीयत अहले हदीस हिंद के अमीर मौलाना असगर अली इमाम मेहदी सलफी ने जामिया इस्लामिया मदीना मुनव्वरा के तत्वावधान में मरकज मलिक सलमान अद-दौली के विशाल सेमिनार हल में २७ से २८ सितंबर २०२६ तक आयोजित अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लिया। सम्मेलन का विषय थों ''वैचारिक भटकाव की रोकथाम में सऊदी अरब के प्रयास''। इस अवसर पर उन्होंने ''वैचारिक भटकाव की रोकथाम में सऊदी विश्वविद्यालयों के फुजला-ए- किराम का योगदान'' विषय पर अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया। इस दो दिवसीय महत्वपूर्ण शैक्षणिक सम्मेलन में सऊदी अरब और इस्लामी दुनिया के विभिन्न क्षेत्रों से जुड़ी प्रमुख शैक्षणिक एवं धार्मिक हस्तियों ने भाग लिया। सम्मेलन में हरमैन शरीफैन के कई इमाम, सऊदी अरब के विभिन्न विश्वविद्यालयों, संस्थानों तथा शैक्षणिक और शोध संगठनों के जिम्मेदार एवं निदेशक शामिल हुए। इसके अतिरिक्त इस्लामी दुनिया के विभिन्न देशों से मुफ्ती, उलेमा और धार्मिक एवं शैक्षणिक हस्तियों की भागीदारी ने सम्मेलन की शैक्षणिक महत्ता और गरिमा को और बढ़ाया इस सम्मेलन की एक प्रमुख विशेषता मदीना मुनव्वरह के गवर्नर महामहिम शहजादा सलमान बिन सुल्तान बिन अब्दुल अजीज आले सऊद की व्यक्तिगत उपस्थिति रही। महामहिम ने २८ सितंबर की रात अपने भव्य महल में सम्मेलन के प्रतिभागियों के सम्मान में एक शानदार रात्रिभोज का भी आयोजन किया। यह सम्मानजनक मेजबानी सऊदी अरब की पारंपरिक मेहमाननवाजी, विद्वानों के प्रति प्रेम और शैक्षणिक गतिविधि ायों के प्रति सम्मान का सुंदर उदाहरण थी।

प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, मौलाना ने एक सवाल के जवाब में बताया कि इस भव्य सम्मेलन में भाग लेना उनके लिए प्रसन्नता और आभार का विषय है। उन्होंने कहा कि जामिया इस्लामिया मदीना मुनव्वरा की ओर से आयोजित इस अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में अपने देश भारत का प्रतिनिधित्व करने और अपना शोध पत्र प्रस्तुत करने का अवसर मिलना उनके लिए सम्मान की बात है। उन्होंने अपना शोधपत्र "भारत में वैचारिक भटकाव की रोकथाम में सऊदी अरब के फुजला-ए-किराम का योगदान" शीर्षक से प्रस्तुत किया।अपने शोधपत्र में उन्होंने भारत में संतुलित विचारधारा और मध्यम मार्ग को बढ़ावा देने, भाईचारे और आपसी प्रेम की भावना विकसित करने तथा कट्टरपंथ, आतंकवाद और वैचारिक भटकाव की रोकथाम में सऊदी अरब के विश्वविद्यालयों से शिक्षा प्राप्त विद्वानों की शैक्षणिक, दावती और सुधारात्मक सेवाओं को रेखांकित किया।उन्होंने इस बात पर भी ध्यान आकर्षित किया कि युवाओं को एक बेहतर इंसान, अच्छा मुसलमान और जिम्मेदार नागरिक बनने के लिए किन गलत विचारों और सिद्धांतों से बचना चाहिए। साथ ही समाज में युवाओं की क्या भूमिका हो सकती है और देश के कघनूनों का पालन करना क्यों आवश्यक है, इस पर भी प्रकाश डाला। इस संदर्भ में उन्होंने भारत में सऊदी विश्वविद्यालयों के फुजला-ए-किराम द्वारा मदरसों,

विश्वविद्यालयों, सम्मेलनों, जनसभाओं और फतवों के माध्यम से की जा रही सेवाओं का उल्लेख किया। इसके साथ ही उन्होंने मरकजी जमीयत अहले हदीस हिंद के मंच से संतुलित विचारधारा, धार्मिक और वैचारिक सहिष्णुता, भाईचारे, प्रेम और आपसी सम्मान को बढ़ावा देने के लिए किए जा रहे प्रयासों का भी उल्लेख किया। उन्होंने बताया कि इस उद्देश्य से कई महत्वपूर्ण सम्मेलन, संगोष्ठियाँ, जनसभाएँ और शैक्षणिक कार्यक्रम आयोजित किए गए हैं। इन कार्यक्रमों में देश के पूर्व प्रधानमंत्री, केंद्रीय गृह मंत्री, अनेक मंत्री, विभिन्न राज्यों के मुख्यमंत्री तथा देश के अलग-अलग धर्मों और संप्रदायों के प्रमुखों ने भाग लिया है। इन कार्यक्रमों के माध्यम से संतुलित विचारधारा, धार्मिक सहिष्णुता और आपसी भाईचारे का प्रभावशाली संदेश आम लोगों तक पहुँचाया गया, जिसके सकारात्मक परिणाम समाज में स्पष्ट रूप से दिखाई दिए हैं।

प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, मरकजी जमीयत अहले हदीस हिंद के अमीर मौलाना ने इस अवसर पर इस्लामी दुनिया के विभिन्न देशों से आए उलेमा, मुफ्तियों और विद्वानों से मुलाकात की तथा विभिन्न विषयों पर विचार-विमर्श किया। इससे यह विश्वास और मजबूत हुआ कि वर्तमान समय की वैचारिक चुनौतियों का प्रभावी ढंग से सामना शैक्षणिक समझ, संतुलित ष्टिकोण और आपसी सहयोग के माध्यम से ही किया जा सकता है। इस सफल और उद्देश्यपूर्ण सम्मेलन के आयोजन पर मरकजी जमीयत अहले हदीस हिंद के सभी सेवक जामिया इस्लामिया मदीना मुनव्वरा के जिम्मेदारों, सऊदी अरब के नेतृत्व और सरकार, सम्मेलन के आयोजकों तथा सभी उलेमा और मशाइख के प्रति हृदय से आभार व्यक्त करते हैं। अल्लाह तआला उनकी बहुआयामी और निरंतर सेवाओं को स्वीकार करे। आमीन।

निःसंदेह सऊदी अरब की शैक्षणिक, धार्मिक, दावती और मानवीय सेवाएँ पूरी इस्लामी दुनिया के लिए अत्यंत मूल्यवान और आदर्श हैं। विभिन्न क्षेत्रों में जारी इन निष्ठापूर्ण प्रयासों से उम्मत-ए-मुस्लिमा के अनेक वर्ग लगातार लाभान्वित हो रहे हैं। हमारे देश भारत के सऊदी अरब के साथ मैत्रीपूर्ण और द्विपक्षीय संबंध हैं। दोनों देश विभिन्न क्षेत्रों में एक-दूसरे के सहयोगी और सहायक हैं। अल्लाह तआला इन सेवाओं को और अधिक विस्तार तथा स्थायित्व प्रदान करे और सऊदी अरब के उलेमा एवं जिम्मेदारों को दीन और उम्मत की और अधिक सेवा करने की तौफीक अता फरमाए।

मौलाना ने कहा कि इस यात्रा को आसान बनाने और सम्मेलन में उनकी भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए जिन मित्रों, मशाइखध और प्रियजनों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और विशेष चिंता एवं रुचि दिखाई, उनमें अजीजम शाह फहद सनाबली (अल्लाह उनकी हिफाजत करे और उन्हें सफलता प्रदान करे) विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। मदीना मुनव्वरा में दो दिनों के प्रवास के दौरान भी वे साये की तरह साथ रहे। उन्होंने जिस सकारात्मक भूमिका का निर्वहन किया, वह प्रशंसा और प्रोत्साहन के योग्य है। अल्लाह उन्हें दीन और दुनिया दोनों में तरक्की अता फरमाए। अल्लाह तआला इस सम्मेलन को वैचारिक संतुलन, शैक्षणिक दूरदर्शिता, आपसी भाईचारे तथा उम्मत-ए-मुस्लिमा की एकता और एकजुटता को बढ़ावा देने का माध्यम बनाए। साथ ही इसके आयोजन में योगदान देने वाले सभी लोगों को दुनिया और आखध्रित में बेहतरीन बदला अता फरमाए। आमीन।

**मर्कजी जमीयत अहले हदीस हिंद के तत्वावधान में २२वाँ दो दिवसीय भव्य आल इंडिया हिफ्ज-व- तजवीद व- तफसीर-ए- कुरआन प्रतियोगिता १ और २ नवंबर को दिल्ली में आयोजित**

**होगी,देशभर के क़ारियों, हाफिजों और दीन एवं आधुनिक शिक्षण संस्थानों के विद्यार्थियों में प्रतियोगिता को लेकर भारी उत्साहय पंजीकरण जारी :**

दिल्लीः ५ अक्टूबर २०२६,

मर्कजी जमीयत अहले हदीस हिंद के तत्वावधान में २२वीं दो दिवसीय भव्य अखिल भारतीय कुरआन हिफ्ज, तजवीद और तफसीर प्रतियोगिता १ और २ नवंबर को दिल्ली में अपनी परंपरा के अनुसार अत्यंत भव्यता और गरिमापूर्ण तरीके से आयोजित की जा रही है। इस प्रतियोगिता में देशभर के दीनि मदरसों और विश्वविद्यालयों के साथ-साथ आधुनिक शिक्षण संस्थानों, स्कूलों, कालेजों और विश्वविद्यालयों के विद्यार्थी बिना किसी मसलकी भेदभाव के बड़ी संख्या में भाग ले रहे हैं। पंजीकरण की प्रक्रिया जारी है और पूरे देश में कारियों, हाफिजों तथा दीनि एवं आधुनिक शिक्षण संस्थानों के विद्यार्थियों के बीच इस प्रतियोगिता को लेकर काफी उत्साह देखा जा रहा है।इस प्रतियोगिता को कुल छह श्रेणियों में विभाजित किया गया हैः १. पहली श्रेणीः संपूर्ण कुरआन करीम का हिफ्ज और तजवीद। २. दूसरी श्रेणीः २० पारे का हिफ्ज और तजवीद। ३. तीसरी श्रेणीः १० पारे का हिफ्ज और तजवीद। ४. चौथी श्रेणीः ५ पारे का हिफ्ज और तजवीद। ५. पाँचवीं श्रेणीः संपूर्ण कुरआन करीम की नाजिरा तिलावत। ६. छठी श्रेणीः कुरआन करीम का अनुवाद और तफसीर।

यह जानकारी मर्कजी जमीयत अहले हदीस हिंद की ओर से जारी एक प्रेस विज्ञप्ति में दी गई।इस अवसर पर मर्कजी जमीयत अहले हदीस हिंद के अमीर मौलाना ने कहा कि कुरआन करीम अल्लाह तआला की ओर से अपने बंदों के लिए अंतिम संदेश और पूरी मानवता के लिए हिदायत, रहमत तथा मार्गदर्शन का शाश्वत स्रोत है। इसकी उज्ज्वल शिक्षाएँ इंसान को आस्था, इबादत, नैतिकता, लेन-देन, सामाजिक जीवन और जिंदगी के प्रत्येक क्षेत्र में सफलता का रास्ता दिखाती हैं। कुरआन करीम केवल तिलावत की किताब नहीं, बल्कि एक संपूर्ण जीवन-व्यवस्था है, जो न्याय, शांति, समानता, भाईचारे, सहिष्णुता, मानव सम्मान और अधिकारों के निर्वहन की शिक्षा देती है।उन्होंने इस प्रतियोगिता की महत्ता और आवश्यकता पर प्रकाश डालते हुए आगे कहा कि वर्तमान राष्ट्रीय और वैश्विक परिस्थितियों में दुनिया विभिन्न संकटों, युद्धों, अत्याचार, अन्याय, नैतिक पतन, सामाजिक विाटन और वैचारिक भटकाव का सामना कर रही है। ऐसे अशांत दौर में कुरआन करीम की शिक्षाओं की आवश्यकता और महत्ता पहले से कहीं अधिक बढ़ गई है।

कुरआन इंसान को संतुलन, धैर्य, सहनशीलता, न्याय और आपसी सम्मान का पाठ पढ़ाता है। यदि पूरी मानवता, विशेषकर मुसलमान, कुरआन को समझकर पढ़ें, उसकी शिक्षाओं को अपने व्यावहारिक जीवन में अपनाएँ और उसका संदेश दूसरों तक पहुँचाएँ, तो इससे न केवल व्यक्ति का सुधार होगा, बल्कि समाज में शांति, एकता, खुशहाली और वास्तविक विकास का मार्ग भी प्रशस्त होगा। प्रतियोगिता के उद्देश्य पर प्रकाश डालते हुए अमीर महोदय ने कहा कि कुरआन करीम के शांति और मानवता के संदेश को आम करने, उसकी शिक्षा, अध्यापन, तिलावत और समझ को बढ़ावा देने तथा उसकी शिक्षाओं पर अमल को देश और समाज में प्रचलित करने के उद्देश्य से मर्कजी जमीयत अहले हदीस हिंद लंबे समय से प्रत्येक वर्ष अखिल भारतीय हिफ्ज, तजवीद और तफसीर प्रतियोगिता का भव्य आयोजन करती आ रही है।इस प्रतियोगिता का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य नई पीढ़ी में स्वस्थ प्रतिस्पर्धा की भावना और रुचि पैदा करना भी है। इसमें देशभर के विभिन्न मसलकों से संबंध रखने वाले दीनि मदरसों, विश्वविद्यालयों, आधुनिक स्कूलों, क लेजों और विश्वविद्यालयों के विद्यार्थी बड़ी संख्या में भाग लेते हैं।

Posted On 24-25 Every Month
**Posted At LPC, Delhi**
**RMS Delhi-110006**
**"Registered with the Registrar of Newspapers for India"**

OCTOBER 2026
**RNI - 53452/90**
P.R.No.DL (DG-11)/8065/2023-25

# ISLAH-E-SAMAJ

**4116, Urdu Bazar, Jama Masjid, Delhi-110006**

खुशख़बरी खुशखबरी

## मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द का

# कलैन्डर 2027

आकर्षक, खुशनुमा, हर सफा इस्लामी तालीमात और कुरआनी आयात से सुसज्जित और अहम मालूमात से पुर कलेन्डर के लिए अपना आर्डर बुक करायें।

## मकतबा तर्जुमान

Ahle Hadees Manzil 4116, Urdu Bazar
Jama Masjid, Delhi-110006




A/c Name : Markazi Jamiat Ahle Hadees Hind
A/c No. **629201058685** (ICIC Bank)
Chandni Chowk, Delhi-110006
(RTGS/NEFT/IFSC CODE ICIC0006292)
पता:-4116 उर्दू बाज़ार, जामा मस्जिद, दिल्ली-110006
Ph. 23273407, Fax : 23246613

**अपील : सदस्यगण, मर्कज़ी जमीअत अलहे हदीस हिन्द**

Total Pages 28